सूचीपत्र संत संग्रह भाग दूसरा

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

संत संग्रह भाग दूसरा

हुज़ूर राधास्वामी साहब के शब्द

॥ शब्द पहिला ॥

करो री कोइ सतसंग आज बनाय ॥ टेक ॥

नरदेही तुम दुर्लभ पाई, अस औसर फिर मिले न आय ॥ १ ॥
तिरिया सुत धन धाम बड़ाई, यह सुख फिर दुख मूल दिखाय ॥ २ ॥
यासे बचो गहो गुरु सरना, सतसंग में तुम बैठो जाय ॥ ३ ॥
यह सब खेल रैन का सुपना, मैं तुमको अब दिया जगाय ॥ ४ ॥
झूठी काया झूठी माया, झूठा मन जो रहा लुभाय ॥ ५ ॥
सतसंग सच्चा सतगुरु सच्चा, नाम सचाई क्या कहुं गाय ॥ ६ ॥
मान बचन मेरा तू सजनी, जनम मरन तेरा छुट जाय ॥ ७ ॥
नभ चढ़ चलो शब्द में पेलो, राधास्वामी कहत बुझाय ॥ ८ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

क्यों फिरत भुलानी जगत में, दिन चार बसेरा ॥ १ ॥
स्वारथ के संगी सभी, जिन तुझ को घेरा ॥ २ ॥
मात पिता सुत इस्तरी, कोइ संग न हेरा ॥ ३ ॥
बिन गुरु सतगुरु कौन है, जो करे निवेरा ॥ ४ ॥
नाम बिना सब जीव, करें चौरासी फेरा ॥ ५ ॥
मन दुलहा गगना चढ़े, सज सूरत सेहरा ॥ ६ ॥
धुन दुलहिन को पाय कर, बसे जाय त्रिकुटी देहरा ॥ ७ ॥
राधास्वामी ध्यान धर, तू साँझ सबेरा ॥ ८ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

जग में घोर अँधेरा भारी, तन में तम का भंडारा ॥ १ ॥
स्वप्न जागरत दोनों देखी, भूल भुलइयां घर मारा ॥ २ ॥
जीव अजान भया परदेसी, देस बिसर गया निज सारा ॥ ३ ॥
फिरे भटकता खान खान में, जोनि जोनि विच झख मारा ॥ ४ ॥
दम दम दुखी कष्ट बहु भोगे, सुने कौन अब बहु हारा ॥ ५ ॥
करे पुकार कारगर नाहीं, पड़े नर्क में जम घारा ॥ ६ ॥
भटक भटक नर देही पाई, इन्द्री मन मिल यहाँ मारा ॥ ७ ॥
सतगुरु संत कहैं बहुतेरा, राह बतावैं दस द्वारा ॥ ८ ॥
बचन न माने कहन न पकड़े, फिर फिर भरमे नौ वारा ॥ ९ ॥
फोकट धर्म पकड़ कर जूझे, बूझे न शब्द जुगत पारा ॥ १० ॥
पानी मथे हाथ कछु नाहीं, क्षीर मथन आलस भारा ॥ ११ ॥
जीव अभाग कहूं मैं क्या क्या, बाहर भरमे भौजारा ॥ १२ ॥
अंतर मुख जो शब्द कमाई, ता में मन को नहिं गारा ॥ १३ ॥
वेद शास्त्र स्मृति और पुराना, पढ़ पढ़ सब पंडित हारा ॥ १४ ॥
बिन सतगुरु और बिना शब्द सुर्त, कोइ न उतरे भौ पारा ॥ १५ ॥
यही बात भाषी मैं चुन कर, अब तो मानो गुरु प्यारा ॥ १६ ॥
राधास्वामी कहा बुझाई, सुरत चढ़ावो नभ द्वारा ॥ १७ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

चेत चलो यह सब जंजाल, काम न आवे कुछ धन माल ॥ १ ॥
गुरु चरन गहो लो नाम सम्हाल, सतसंग करो धरो अब ख्याल ॥ २ ॥
काम क्रोध संग मन पामाल, भर्म भुलाना कर्मन नाल ॥ ३ ॥
कहा कहूं यह मन का हाल, रोग सोग संग होत बेहाल ॥ ४ ॥
जीव गिरासे जम और काल, देखत जग में यह दुख साल ॥ ५ ॥
तौभी चेत न पकड़े ढाल, छिन छिन मारे काल कराल ॥ ६ ॥
राधास्वामी गुरु जब हौंय दयाल, चरन सरन दे करैं निहाल ॥ ७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

लाज जग काज बिगाड़ा री, मोह जग फंदा डारा री ॥ १ ॥
कुटंब की यारी ख़्वारी री, काल संग ब्याही क्वारी री ॥ २ ॥
कर्म ने फाँसी डारी री, करे जम हाँसी भारी री ॥ ३ ॥
मरन की सुद्ध बिसारी री, देह अब लागी प्यारी री ॥ ४ ॥
मान में खप गई सारी री, पोट सिर भारी धारी री ॥ ५ ॥
जीत कर बाजी हारी री, चाह जग की नहिं मारी री ॥ ६ ॥
राधास्वामी कहत पुकारी री, करो कोइ जतन विचारी री ॥ ७ ॥
गुरू संग करो सुधारी री, नाम रस पियो अपारी री ॥ ८ ॥

॥ शब्द छटवाँ ॥

मुसाफ़िर रहना तुम हुशियार, ठगौं ने आन बिछाया जाल ॥ १ ॥
अकेले मत जाना इस राह, गुरू बिन नहिं होगा निरबाह ॥ २ ॥
जमा सब लेंगे तेरी छीन, करेंगे तुझको अपना दीन ॥ ३ ॥
ठगौं ने रोका सब संसार, गुरू बिन पड़ गई सब पर धाड़ ॥ ४ ॥
मान लो कहना मेरा यार, संग इन तजना पकड़ किनार ॥ ५ ॥
गुरू बिन और न कोइ रखवार, कहूं मैं तुम से बारम्बार ॥ ६ ॥
होयगी मंज़िल तेरी पार, गुरू से करले दृढ़ कर प्यार ॥ ७ ॥
गुरू के चरन पकड़ यह सार, इन्द्री भोग भुलावत भाड़ ॥ ८ ॥
यही हैं ठगिया करत ठगार, कहें राधास्वामी तोहि पुकार ॥ ९ ॥
सरन में आजा लेउँ सम्हार, नाम संग होजा हीत उधार ॥ १० ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में, पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में ॥ १ ॥
चेत कर प्रीत करो सतसंग में, गुरू फिर रंगदें नाम अरंग में ॥ २ ॥
धन संपत तेरे काम न आवे, छोड़ चलो याहि छिन में ॥ ३ ॥
आगे रैन अँधेरी भारी, काज करो कुछ दिन में ॥ ४ ॥
यह देही फिर हाथ न आवे, फिरो चौरासी बन में ॥ ५ ॥

गुरु सेवा कर गुरू रिझाओ, आओ तुम इस ढंग में ॥ ६ ॥
गुरु बिन तेरा और न कोई, धार बचन यह मन में ॥ ७ ॥
जगत जाल में फँसो न भाई, निस दिन रहो भजन में ॥ ८ ॥
साध गुरू का कहना मानो, रहो उदास जगत में ॥ ९ ॥
छल बल छोड़ो और चतुराई, क्यों तुम पड़ो कुगत में ॥ १० ॥
सुमिरन करो गुरू को सेवो, चल रहो आज गगन में ॥ ११ ॥
कल की खबर काल फिर लेगा, वहाँ तुम जलो अगिन में ॥ १२ ॥
अबही समझ देर मत करियो, ना जानूं क्या होय इस पन में ॥ १३ ॥
यों समझाय कहें राधास्वामी, मानो एक बचन में ॥ १४ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

मौत से डरत रहो दिन रात ॥ टेक ॥

इक दिन भारी भीड़ पड़ेगी, जम खूंदेंगे घर घर लात ॥ १ ॥
वा दिन की तुम याद बिसारी, अब भोगन में रहो भुलात ॥ २ ॥
एक दिन काठी बने तुम्हारी, चार कहरवा लादे जात ॥ ३ ॥
भाई बंधु कुटंब परिवारा, सो सब पीछे भागे जात ॥ ४ ॥
आगे मरघट जाय उतारा, तिरिया रोवे बिखेरे लाट ॥ ५ ॥
वहाँ जमपुर में नरक निवासा, यहाँ अग्नी में फूंके जात ॥ ६ ॥
दोनों दीन बिगाड़े अपने, अब नहिं सुनता सतगुरु बात ॥ ७ ॥
वा दिन बहु पछितावा होगा, अब तुम करते अपनी घात ॥ ८ ॥
ज्वानी गई वृद्धता आई, अब के दिन का इनका साथ ॥ ९ ॥
चेत करो मानो यह कहना, गुरु के चरन झुकाओ माथ ॥ १० ॥
राधास्वामी कहत सुनाई, अब तुमको बहु विधि समझात ॥ ११ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

बंधे तुम गाढ़े बंधन आन ॥ टेक ॥

पहिले बंधन पड़ा देह का, दूसर तिरिया जान ॥ १ ॥
तीसर बंधन पुत्र बिचारो, चौथा नाती मान ॥ २ ॥

नाती के कहिं नाती होवे, फिर कहो कौन ठिकान ॥ ३ ॥
धन संपति और हाट हवेली, यह बंधन क्या करूँ बखान ॥ ४ ॥
चौलड़ पचलड़ सतलड़ रसरी, बाँध लिया अब बहु बिधि तान ॥ ५ ॥
कैसे छूटन होय तुम्हारा, गहरे खूंटे गड़े निदान ॥ ६ ॥
मरे बिना तुम छूटो नाहीं, जीते जी तुम सुनो न कान ॥ ७ ॥
जगत लाज और कुल मरजादा, यह बंधन सब ऊपर ठान ॥ ८ ॥
लोक पुरानो कभी न छोड़ो, जो छोड़ो तो जग की हान ॥ ९ ॥
क्या क्या कहूं विपत मैं तुम्हरी, भटको जोनी भूत मसान ॥ १० ॥
तुम तो जगत रुख कर पकड़ा, क्यों कर पावो नाम निशान ॥ ११ ॥
बेड़ी तौक़ हथकड़ी बाँधे, काल कोठरी कष्ट समान ॥ १२ ॥
काल दुष्ट तुम्हें बहु विधि बाँधा, तुम खुश होके रहो गलतान ॥ १३ ॥
ऐसे मूरख दुख सुख जाना, क्या कहुं अजब सुजान ॥ १४ ॥
शरम करो कुछ लज्जा ठानो, नहिं जमपुर का भोगो डान ॥ १५ ॥
राधास्वामी सरन गहो अब, तो कुछ पाओ उनसे दान ॥ १६ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

तजो मन यह दुख सुख का धाम, लगो तुम चढ़कर अब सतनाम ॥ १ ॥
दिना चार तन संग बसेरा, फिर छूटे यह ग्राम ॥ २ ॥
धन दारा सुत नाती कहियन, यह नहिं आवैं काम ॥ ३ ॥
स्वाँस दुधारा नितही जारी, एक दिन खाली चाम ॥ ४ ॥
मशक समान जान यह देही, बहती आठौं जाम ॥ ५ ॥
तू अचेत ग़ाफ़िल हो रहता, सुने न मूल कलाम ॥ ६ ॥
माया नार पड़ी तेरे पीछे, क्यों नहिं छोड़त काम ॥ ७ ॥
बिन गुरु दया छुटो नहिं यासे, भजो गुरू का नाम ॥ ८ ॥
गुरु का ध्यान धरो हिरदे में, मन को राखो थांम ॥ ९ ॥
वे दयाल तेरी दया विचारैं, दम दम करैं सहाम ॥ १० ॥
छोड़ भोग क्यों रोग बसावे, या में नहिं आराम ॥ ११ ॥

गुरु का कहना मान पियारे, तो पावे बिसराम ॥ १२ ॥
दुख तेरा सब दूर करेंगे, देंगे अचल मुक़ाम ॥ १३ ॥
राधास्वामी कहत सुनाई, खोज करो निज नाम ॥ १४ ॥

॥ शब्द ग्यारहवां ॥

देखो सब जग जात बहा ॥ टेक ॥

देख देख मैं गति या जग की, बार बार यों बरन कहा ॥ १ ॥
चारौं जुग चौरासी भोगी, अति दुख पाया नरक रहा ॥ २ ॥
जनम जनम दुख पावत बीते, इक छिन कहीं न चैन लहा ॥ ३ ॥
पाप पुन्न बस बिपता भोगी, नहिं सतगुरु का चरन गहा ॥ ४ ॥
अब यह देह मिली किरपा से, करो भक्ति जो करम दहा ॥ ५ ॥
अब की चूक माफ़ नहिं होगी, नाना बिधि के कष्ट सहा ॥ ६ ॥
ग़फ़लत छोड़ भुलाओ जग को, नाम अमल अब घोट पिया ॥ ७ ॥
मन से डरो करो गुरु सेवा, राधास्वामी भेद दिया ॥ ८ ॥

॥ शब्द बारहवां ॥

कोइ मानो रे कहन हमारी ॥ टेक ॥

जो जो कहूं सुनो चित देकर, गौं की कहूं तुम्हारी ॥ १ ॥
जग के बीच बँधे तुम ऐसे, जैसे सुवना नलनी धारी ॥ २ ॥
मरकट सम तुम हुए अनाड़ी, मुट्ठी दीन फंसा री ॥ ३ ॥
और मीना जिह्वा रस माती, काँटा जिगर छिदा री ॥ ४ ॥
गज सम मूरख हुए इस बन में, झूठी हथिनी देख बँधारी ॥ ५ ॥
क्या क्या कहूं काल अन्याई, बहु बिधि तुमको फाँस लिया री ॥ ६ ॥
तुम अनजान मरम नहिं जाना, छल बल कर इन फाँस लियारी ॥ ७ ॥
छूटन की बिधि नेक न मानो, कैसे छूटन होय तुम्हारी ॥ ८ ॥
सतगुरु संत हुए उपकारी, उन का संग करो न सम्हारी ॥ ९ ॥
वे दयाल अस जुगत लखावैं, करदें तुम छुटकारी ॥ १० ॥
पाँच तत्त गुन तीन जेवरी, काटैं पल पल बंधन भारी ॥ ११ ॥

उनकी संगत करो भरम तज, पाओ तुम गति न्यारी ॥ १२ ॥
जगत जाल सब धोखा जानो, मन मूरख संग कीन्हो यारी ॥ १३ ॥
इस का संग तजो तुम छिनछिन, नहिं यह लेगा जान तुम्हारी ॥ १४ ॥
अपने घर से दूर पड़ोगे, चौरासी के धक्के खा री ॥ १५ ॥
बड़ी कुगत में जाय पड़ोगे, वहां से तुम को कौन निकारी ॥१६॥
ताते अबही कहना मानो, राधास्वामी कहत बिचारी ॥ १७ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

अटक तू क्यों रहा जग में, भटक में क्या मिले भाई ॥ १ ॥
खटक तू धार अब मन में, खोज सतसंग में जाई ॥ २ ॥
विरह की आग जब भड़के, दूर कर जक्त की काई ॥ ३ ॥
लगा लो लगन सतगुरु से, मिले फिर शब्द लौ लाई ॥ ४ ॥
छुटेगा जनम और मरना, अमर पद जाय तू पाई ॥ ५ ॥
भाग तेरा जगे सोता, नाम और धाम मिल जाई ॥ ६ ॥
कहूं क्या काल जग मारा, जीव सब घेर भरमाई ॥ ७ ॥
नहीं कोइ मौत से डरता, खौफ़ जम का नहीं लाई ॥ ८ ॥
पड़े सब मोह की फाँसी, लोभ ने मार घर खाई ॥ ९ ॥
चेत कहो होय अब कैसे, गुरू के संग नहिं धाई ॥ १० ॥
काम और क्रोध बिच बिच में, जीव से भाड़ झुकवाई ॥ ११ ॥
गुरू बिन कोइ नहीं अपना, जाल यह कौन तुड़वाई ॥ १२ ॥
कुटंब परिवार मतलब का, बिना धन पास नहिं आई ॥ १३ ॥
कहाँ लग कहूं इस मन को, उन्हीं से मास नुचवाई ॥ १४ ॥
गुरू और साध कहें बहु विधि, कहन उनकी न पतियाई ॥ १५ ॥
मेहर बिन क्या कोई माने, कही राधास्वामी यह गाई ॥ १६ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

मिली नरदेह यह तुम को, बनाओ काज कुछ अपना ॥ १ ॥
पचो मत आय इस जग में, जानियो रैन का सुपना ॥ २ ॥

देह और गेह सब झूठा, भरम में काहे को खपना ॥ ३ ॥
जीव सब लोभ में भूले, काल से कोइ नहीं बचना ॥ ४ ॥
तिरिश्ना अगिन जग जारा, पड़ा सब जीव को तपना ॥ ५ ॥
नहीं कोइ राह बचने की, जलें सब नर्क की अगिना ॥ ६ ॥
जलेंगे आग में निसदिन, बहुर भोगें जनम मरना ॥ ७ ॥
भटकते वे फिरें खानो, नहीं कुछ ठीक उन लगना ॥ ८ ॥
कहूं क्या दुक्ख वह भोगें, कहन में आ नहीं सकना ॥ ९ ॥
दया कर संत और सतगुरु, बतावें नाम का जपना ॥ १० ॥
न माने जुगत यह उनकी, सुरत और शब्द का गहना ॥ ११ ॥
बिना सतगुरु बिना करनी, छुटे नहिं खान का फ़िरना ॥ १२ ॥
कहाँ लग मैं कहूं उनको, कोई नहिं मानता कहना ॥ १३ ॥
हुए मनमुख फिरें दुख में, बचन गुरु का नहीं माना ॥ १४ ॥
पुजावैं आप को जग में, गुरू की सेव नहिं करना ॥ १५ ॥
फ़िकर नहिं जीव का अपने, पड़ेगा नर्क में फुकना ॥ १६ ॥
समझ कर धार लो मन में, कहें राधास्वामी निज बचना ॥ १७ ॥

॥ शब्द पन्द्रहवाँ ॥

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना ॥ टेक ॥

यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी, मन के साथ न पड़ना ॥ १ ॥
भौजल धार बहे अति गहरी, बिन गुरु कैसे पार उतरना ॥ २ ॥
गुरु से प्रीत करो तुम ऐसी, जस कामी कामिन संग धरना ॥ ३ ॥
संग करो चेटक चित राखो, मन से गुरु के चरन प्रकड़ना ॥ ४ ॥
छल बल कपट छोड़ कर बरतो, गुरु के बचन समझना ॥ ५ ॥
डरते रहो काल के भय से, खबर नहीं कब मरना ॥ ६ ॥
स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे, पल पल नाम सुमिरना ॥ ७ ॥
यहाँ की गफ़लत बहुत सतावे, फिर आगे कुछ बन नहिं पड़ना ॥ ८ ॥
जो कुछ बने सो अभी बनाओ, फिर का कुछ न भरोसा धरना ॥ ९ ॥

जग सुख की कुछ चाह न राखो, दुख में इसके दुखी न रहना ॥ १० ॥
दुख की घड़ी ग़नीमत जानो, नाम गुरू का छिन २ भजना ॥ ११ ॥
सुख में ग़ाफ़िल रहत सदा नर, मन तरंग में दम दम बहना ॥ १२ ॥
ताते चेत करो सतसंगत, दुख सुख नदियाँ पार उतरना ॥ १३ ॥
अपना रूप लखो घट भीतर, फिर आगे को सूरत भरना ॥ १४ ॥
राधास्वामी कहें बुझाई, शब्द गुरू से जाकर मिलना ॥ १५ ॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

मन रे क्यौं गुमान अब करना ॥ टेक ॥

तन तो तेरा ख़ाक मिलेगा। चौरासी जा पड़ना ॥ १ ॥
दीन ग़रीबी चित में धरना। काम क्रोध से बचना ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत गुरू की करना। नाम रसायन घट में जरना ॥ ३ ॥
मन मलीन के कहे न चलना। गुरु का बचन हिये बिच रखना ॥ ४ ॥
यह मतिमंद गहे नहिं सरना। लोभ बढ़ाय उदर को भरना ॥ ५ ॥
तुम मानो मत इसका कहना। इसके संग जक्त बिच गिरना ॥ ६ ॥
इस मूरख को समझ पकड़ना। गुरु के चरन कभी न बिसरना ॥ ७ ॥
गुरु का रूप नैन में धरना। सुरत शब्द से नभ पर चढ़ना ॥ ८ ॥
राधास्वामी नाम सुमिरना। जो वह कहैं चित्त में धरना ॥ ९ ॥

॥ शब्द सत्रहवाँ ॥

जक्त से चेतन किस विधि होय। मोह ने बाँध लिया अब मोहिं ॥ १ ॥
बेड़ियाँ भारी पड़ती जायँ। फाँसियाँ करड़ी लागीं आयँ ॥ २ ॥
जाल अब चौड़े बिछ गये आय। चाट अब सुख की कुछ २ पाय ॥ ३ ॥
दुक्ख अब पीछे होगा आय। ख़बर नहिं उसकी कौन बताय ॥ ४ ॥
पड़ेगी भारी इक दिन भीड़। सहेगा नाना विधि की पीड़ ॥ ५ ॥
करेगा पछतावा जब बहुत। अभी तो सुनता नहिं दिन सोत ॥ ६ ॥
याद नहिं लाता अपनी मौत। रात दिन ग़फ़लत में पड़ा सोत ॥ ७ ॥

कहे में मन के चलता बहुत । भरे है दिन भर जग का पीत ॥ ८ ॥
रात को सोता खाट बिछाय । होश नहिं कल को क्या हो जाय ॥ ९ ॥
काल ने मारा कर कर ज़ेर । कर्म ने खूंदा धर धर पैर ॥ १० ॥
तमोगुन छाय गया घट माहिं । ख़बर सब भूल गया यहँ आय ॥ ११ ॥
संत और सतगुरु रहे चिताय । बचन उन मन में नहीं समाय ॥ १२ ॥
भजनऔर सुमिरन दिया बिसराय । प्रीतभीउनचरननननहिंलाय ॥१३॥
कहो कस छूटे जम की घात । भोग और सोग लगे दिन रात ॥१४॥
गुरू बिन कौन छुड़ावे ताय । हुआयहक़ैदीबहुबिधिआय ॥ १५ ॥
बिना सतसंग और बिन नाम । न पावे कबही अपना धाम ॥ १६ ॥
कहीराधास्वामी यह गति गाय । सरन ले संत की तू जाय ॥ १७ ॥

॥ शब्द अठारहवां ॥

कुमतिया बैरन पीछे पड़ी, मैं कैसे हटाऊँ जान ॥ १ ॥
संतगुरु बचन न माने कबहीं, उन सँग धरे गुमान ॥ २ ॥
काम क्रोध की सनी बुद्धि से, परखा चाहे उनका ज्ञान ॥ ३ ॥
सेवा करे न सरधा लावे, उलट करावे उन से मान ॥ ४ ॥
अपनी गत हालत नहिं बूझे, कैसे लगे ठिकान ॥ ५ ॥
लोभ मोह की सूखी नदियाँ, तामे निस दिन रहे भरमान ॥ ६ ॥
संत मता कहो कैसे बूझे, अपनी मति के दे परमान ॥ ७ ॥
तिन से संत मौन होय बैठे, सो जिव करते अपनी हान ॥ ८ ॥
कुमति अधीन हुए सब प्रानी, क्या क्या उनका करूँ बखान ॥ ९ ॥
जिन पर मेहर पड़ैं आ सरना, वह पावैं सतगुरु पहिचान ॥ १० ॥
अपनी जुक्ति चतुरता छोड़ैं, अपने को जानें अनजान ॥ ११ ॥
तब सतगुरु परसन्न होयकर, देवैं पता निशान ॥ १२ ॥
कुमति हटाय छुड़ावैं पीछा, सुरत लगादें शब्द धियान ॥ १३ ॥
बिना शब्द उद्धार न होगा, सब संतन यह किया बखान ॥ १४ ॥
सोई गावैं राधास्वामी, जो कोइ माने सोई सुजान ॥ १५ ॥

॥ शब्द उन्नीसवाँ ॥

सोता मन कस जागे भाई। सो उपाव मैं करूँ बखान ॥ १ ॥
तीरथ करे बर्त भी राखे। विद्या पढ़के हुए सुजान ॥ २ ॥
जप तप संजम बहु विधि धारे। मौनी हुए निदान ॥ ३ ॥
अस उपाव हम बहुतक कीन्हे। तौ भी यह मन जगा न आन ॥ ४ ॥
खोजत खोजत सतगुरु पाये। उन यह जुक्ति कही परमान ॥ ५ ॥
सतसंग करो संत को सेवो। तन मन उन पर करो कुरबान ॥ ६ ॥
सतगुरु शब्द सुनो गगना चढ़। चेत लगाओ अपना ध्यान ॥ ७ ॥
जागत जागत अब मन जागा। झूठा लगा जहान ॥ ८ ॥
मन की मदद मिली सूरत को। दोनौं अपने महल समान ॥ ९ ॥
बिना शब्द यह मन नहिं जागे। करो चाहे कोइ अनेक विधान ॥ १० ॥
यही उपाव छांट कर गाया। और उपाव न कर परमान ॥ ११ ॥
बिरथा बैस बितावैं अपनी। लगे न कभी ठिकान ॥ १२ ॥
संत बिना सब भटके डोलें। बिना संत नहिं शब्द पिछान ॥ १३ ॥
शब्द शब्द मैं शब्दहि गाऊँ। तू भी सुरत लगा दे तान ॥ १४ ॥
घर पावे चौरासी छूटे। जनम मरन की होवे हान ॥ १५ ॥
राधास्वामी कहें बुझाई। बिना संत सब भटके खान ॥ १६ ॥

॥ शब्द बीसवाँ ॥

यह तन दुर्लभ तुम ने पाया। कोटि जनम भटका जब खाया ॥ १ ॥
अब याको बिरथा मत खोओ। चेतो छिन छिन भक्ति कमाओ ॥ २ ॥
भक्ति करो तो गुरु की करना। मारग शब्द गुरू से लेना ॥ ३ ॥
शब्द मारगी गुरू न होवे। तो झूंठी गुरुवाई होवे ॥ ४ ॥
गुरु सोई जो शब्द सनेही। शब्द बिना दूसर नहिं सेई ॥ ५ ॥
शब्द कहा मैं गगन शिखर का। शब्द कहा मैं सुन्न शहर का ॥ ६ ॥
शब्द कहा मैं भँवर डगरका। शब्द कहा मैं अगम नगर का ॥ ७ ॥
गुरु पहिचान खब मैं गाई। धोखा या मैं कुछ न रहाई ॥ ८ ॥

शब्द कमावे सो गुरु पूरा। उन चरनन की हो जा धूरा॥ ९॥
और पहिचान करो मत कोई। लक्ष अलक्ष न देखो सोई॥ १०॥
शब्द भेद लेकर तुम उनसे। शब्द कमाओ तुम तन मन से॥ ११॥
अपने जीव की कुछ दया पालो। चौरासी का फेर बचा लो॥ १२॥
नहिं नर्कन में अति दुख पैहो। अग्नि कुंड में छिन २ दहिहो॥ १३॥
यह सुख चार दिनौं का भाई। फिर दुख सदा होय दुखदाई॥ १४॥
बार बार मैं कहूं चिताई। दया तुम्हारी मोहिं सताई॥ १५॥
मेरे मन करुना अस आई। चेतो तुम गुरु होयँ सहाई॥ १६॥
बिन गुरु और न पूजो कोई। दर्शन कर गुरुपद नित सेई॥ १७॥
गुरु पूजा में सबकी पूजा। जस समुद्र सब नदी समाजा॥ १८॥
देवी देवा ईस महेशा। सूरज शेष और गौर गनेशा॥ १९॥
ब्रह्म और पारब्रह्म सतनामा। तीन लोक और चौथा धामा॥ २०॥
गुरु सेवा में सबकी सेवा। रंचक भर्म न मानो भेवा॥ २१॥
ताते बार बार समझाऊँ। गुरु की भक्ती छिन छिन गाऊँ॥ २२॥
गुरुमुख होय गुरु अज्ञा बरते। गुरु बरती एक छिन में तरते॥ २३॥
गुरु महिमा मैं कहां लग गाऊँ। गुरु समान कोइ और न पाऊँ॥ २४॥
गुरु अस्तुत है सब मत माहीं। गुरु से बेमुख ठौर न पाहीं॥ २५॥
भोग बिलास हुकूमत जगकी। धन और हाकिम के बस रहती॥ २६॥
हाकिम सेवा तुम कस करते। धन और मान बड़ाई लेते॥ २७॥
अज्ञा उसकी अस सिर धरते। खान पान निद्रा भी तजते॥ २८॥
सो धन जोड़ किया क्या भाई। जक्त लाज में दिया उड़ाई॥ २९॥
सो जग की गति पहिले भाखो। चार दिना फिर है नहिं बाकी॥ ३०॥
सो धन कारन हाकिम सेवा। ऐसी करते क्या कहुं भेवा॥ ३१॥
गुरु सेवा जो सदा सहाई। ता को ऐसी पीठ दिखाई॥ ३२॥
दिन नहिं पक्ष मास नहिं बरसा। कभी न दर्शन को मन तरसा॥ ३३॥
कहो कैसे तुम्हरा उद्धारा। नर्क निवास दुक्ख चौधारा॥ ३४॥

उस दुख में कहो कौन सहाई । गुरु से प्रीत न करी बनाई ॥ ३५ ॥
जो इसकी परतीत न लाओ । तो मन अपना यौं समझाओ ॥ ३६ ॥
रोग दुक्ख नित प्रती सताई । मौत पियादे हैं यह भाई ॥ ३७ ॥
मृत्यु होन में नहिं कुछ संसा । वह तो करे सकल जिव हिंसा ॥ ३८ ॥
यह हिंसा तुम पर भी आवे । इक दिन काल सीस पर धावे ॥ ३९ ॥
उस दिन का कुछ करो उपाई । धन हाकिम कुछ काम न आई ॥ ४० ॥
पर जो समझवार तुम होते । तो धन से कुछ कारज लेते ॥ ४१ ॥
कारज लेना यह है भाई । गुरु सेवा में ख़र्च कराई ॥ ४२ ॥
गुरु नहिं भूखा तेरे धन का । उन पै धन है भक्ति नाम का ॥ ४३ ॥
पर तेरा उपकार करावें । भूखे प्यासे को दिलवावें ॥ ४४ ॥
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे । जो उन को परसन्न करावे ॥ ४५ ॥
उनका ख़ुश होना है भारी । सत्तपुरुष निज किरपा धारी ॥ ४६ ॥
गुरु परसन्न होयँ जा ऊपर । वही जीव है सब के ऊपर ॥ ४७ ॥
गुरु राज़ी तो करता राज़ी । कर्म काल की चले न बाज़ी ॥ ४८ ॥
गुरु की आन सभी मिल मानें । सुकदेव नारद व्यास बखानें ॥ ४९ ॥
ताते गुरु को लेव रिझाई । औरन रीझे कुछ न भलाई ॥ ५० ॥
गुरु परसन्न और सब रूठे । तौ भी उस का रोम न टूटे ॥ ५१ ॥
औरन को परसन्न जो करता । गुरु से द्रोह घात जो रखता ॥ ५२ ॥
गुरु की निंदा से नहिं डरता । गुरु को मानुष रूप समझता ॥ ५३ ॥
सो नरकी जानो अपघाती । उस सँग दूत करें उतपाती ॥ ५४ ॥
या ते समझो बूझो भाई । गुरु को परसन करो बनाई ॥ ५५ ॥
कुल कुटंब कोइ काम न आई । और बिरादरि करे न सहाई ॥ ५६ ॥
यह तो चार दिना के संगी । इन निज स्वारथ में बुधि रंगी ॥ ५७ ॥
लज्जा डर इनका मत करना । गुरु भक्ती में अब चित धरना ॥ ५८ ॥
गुरु सहायता यहाँ वहाँ करें । उनसे करता भी कुछ डरें ॥ ५९ ॥
कुल कुटम्ब से कुछ नहिं सरे । इन के संग नर्क में पड़े ॥ ६० ॥

कार्ज मात्र बरतो इन माहीं। बहुत मोह में बहु दुख पाई ॥ ६१ ॥
ताते सतसँग सतगुरु सेवो। नाम पदारथ दम दम लेवो ॥ ६२ ॥
गुरु समान और नाम समाना। तीसर सतसँग और न जाना ॥ ६३ ॥
इन से सब कारज होयँ पूरे। कर्म काट पहुंचो घर मूरे ॥ ६४ ॥
यह कहना मेरा अब मानो। नहीं अंत को पड़े पछतानो ॥ ६५ ॥
धन और मान काम नहिं आवे। हुकुम हाकिमी सभी नसावे ॥ ६६ ॥
ताते कुछ भक्ती कर लीजे। यह भी सुफल कमाई कीजे ॥ ६७ ॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

नाम दान अब सतगुरु दीजे। काल सतावे स्वाँसा छीजे ॥ १ ॥
दुख पावत मैं निस दिन भारी। गही आय अब ओट तुम्हारी ॥ २ ॥
तुम समान कोइ और न दाता। मैं बालक तुम पित और माता ॥ ३ ॥
मोको दुखी आप कस देखो। यह अचरज मोहिं होत परेखो ॥ ४ ॥
हूं मैं पापी अधम बिकारी। भूला चूका छिन छिन भारी ॥ ५ ॥
अवगुन अपने कहाँ लग बरनूं। मेरी बुधि समझे नहिं मरमूं ॥ ६ ॥
तुम्हरी गति मति नेक न जानूं। अपनी मति अनुसार बखानूं ॥ ७ ॥
तुम समरथ और अंतरजामी। क्या क्या कहुं मैं सतगुरु स्वामी ॥ ८ ॥
मौज करो दुख अन्तर हरो। दया दृष्टि अब मो पर धरो ॥ ९ ॥
माँगूं नाम न माँगूं मान। जस जानो तस देव मोहिं दान ॥ १० ॥
मैं अति दीन भिखारी भूखा। प्रेम भाव नहिं सब बिधि रूखा ॥ ११ ॥
कैसे दोगे नाम अमोला। मैं अपने को बहु बिधि तोला ॥ १२ ॥
होय निरास सबर कर बैठा। पर मन धीरज धरे न नेका ॥ १३ ॥
शायद कभी मेहर हो जावे। तौ कहुं नाम नोक मिल जावे ॥ १४ ॥
विना मेहर कोइ जतन न सूझे। बख्शिश होय तभी कुछ बूझे ॥ १५ ॥
किनका नाम करे मेरा काज। हे सतगुरु मेरी तुम को लाज ॥ १६ ॥
अब तो मन कर चुका पुकार। राधास्वामी करो उधार ॥ १७ ॥

॥ शब्द बाईसवाँ ॥

नाम रस पीवो गुरु की दात। शब्द सँग भींजो मन कर हाथ॥ १॥
चरन गुरु पकड़ो तन मन साथ। मान मद मारो आवे शांत॥ २॥
परख कर समझो गुरु की बात। निरख कर चलियो माया घात॥ ३॥
जक्त सब डूबा भौजल जात। नाम बिन छुटे न जम का नात॥ ४॥
घाट घट उलटो दिन और रात। मोह की बाज़ी होगी मात॥ ५॥
सुरत से करो शब्द विख्यात। गगन चढ़ देखो जा साक्षात॥ ६॥
मिटे फिर मन की सब उतपात। राधास्वामी परखो और परखात॥ ७॥

॥ शब्द तेईसवाँ ॥

सुरत क्यौं भूल रही। अब चेत चलो स्वामी पास॥ १॥
हे मनुवाँ तुम सदा के संगी। त्यागो जगत की आस॥ २॥
हे इंद्रियन तुम भोग दिवानी। क्यौं फँसो काल की फाँस॥ ३॥
जल्दी से अब मुख को मोड़ो। अन्तर अजब विलास॥ ४॥
जैसे बने तैसे करो कमाई। धर चरनन विस्वास॥ ५॥
राधास्वामी दीनदयाला। दे हैं अगम निवास॥ ६॥
तब सुख साथ रहो घर अपने। फिर होय न तन में बास॥ ७॥

॥ शब्द चौबीसवाँ ॥

सखी री क्यौं देर लगाई, चटक चढ़ो नभ द्वार॥ १॥
इस नगरी में तिमिर समाना, भूल भरम हर बार॥ २॥
खोज करो अन्तर उजियारी, छोड़ चलो नौ द्वार॥ ३॥
सहस कँवल चढ़ त्रिकुटी धाओ, भँवर गुफा सतलोक निहार॥ ४॥
अलख अगम के पार सिधारो, राधास्वामी चरन सम्हार॥ ५॥

॥ शब्द पचीसवाँ ॥

क्या सोवे जग में नींद भरी। उठ जागो जल्दी भोर भई॥ १॥
पंथी सब उठ के राह लई। तू मंज़िल अपनी बिसर गई॥ २॥

सतगुरु का खोज करो प्यारी । सँग उनके बाट चलो न्यारी ॥ ३ ॥
भौसागर है गहिरा भारी । गुरु बिन को जाय सके पारी ॥ ४ ॥
भक्ती की रीत सुनो प्यारी । गुरु चरनन प्रीत करो सारी ॥ ५ ॥
तज संशय भरम करम जारी । तब सुरत अधर घर पग धारी ॥ ६ ॥
चढ़ गगन शिखर तन मन वारी । धुन बीन सुनी सत पद न्यारी ॥ ७ ॥
फिर अलख अगम जा परसारी । राधास्वामी चरन पर बलिहारी ॥ ८ ॥

॥ शब्द छब्बीसवाँ ॥

हे मेरे प्यारे सज्जन । जग भूल निकारो ॥ १ ॥
सतगुरु को खोजो जल्दी । सतनाम सम्हारो ॥ २ ॥
कुल कुटंब कोइ संगी नाहीं । धन सम्पत जारो ॥ ३ ॥
सुत अंश अकेली जावे । सब से होय न्यारो ॥ ४ ॥
यह देश तुम्हारा नाहीं । सुध घर की धारो ॥ ५ ॥
अब प्रीत करो सतगुरु से । तन मन धन वारो ॥ ६ ॥
चरनों में सुरत लगाओ । मद मोह काम सब टारो ॥ ७ ॥
गुरु समरथ दीनदयाला । तब देहैं दान कर प्यारो ॥ ८ ॥
तेरी सुरत अधर चढ़ जावे । और पियो अमीं रस सारो ॥ ९ ॥
राधास्वामी नित गुन गावो । तन मन से होकर न्यारो ॥ १० ॥

॥ शब्द सत्ताइसवाँ ॥

सतगुरु आय दिया जग हेला । जागो रे मेरे प्यारे जागो ॥ १ ॥
काल शिकारी मग में ठाढ़ा । भागो रे मेरे प्यारे भागो ॥ २ ॥
गुरु सरूप तेरे घट में बसता । झाँको रे मेरे प्यारे झाँको ॥ ३ ॥
मान मनी तज गुरु चरनन में । लागो रे मेरे प्यारे लागो ॥ ४ ॥
जगत भाव भोगन की आसा । त्यागो रे मेरे प्यारे त्यागो ॥ ५ ॥
नैन कँवल गुरु डगर पिया की । ताको रे मेरे प्यारे ताको ॥ ६ ॥
दृढ़ परतीत भरोस पिया का । राखो रे मेरे प्यारे राखो ॥ ७ ॥
राधास्वामी २ छिन २ हिय से । भाखो रे मेरे प्यारे भाखो ॥ ८ ॥

॥ शब्द अट्ठाईसवाँ ॥

ज़ग में पड़ा घोर अँधियारा। करम भरम का बड़ा पसारा ॥१॥
भर्मों में सब जीव भुलाने। विद्या पढ़ पढ़ हुए सयाने ॥२॥
कृत्रिम पूजा उन सब धारी। निज घर की उन सुद्ध बिसारी ॥३॥
निज पद है राधास्वामी धामा। सत्तपुरुष सतलोक ठिकाना ॥४॥
संत आय यह भेद जनावैं। करमी जीव प्रतीत न लावैं ॥५॥
जब नहिं हते ब्रह्म और माया। बेद पुरान नहीं प्रगटाया ॥६॥
पाँचो तत्त न तिरगुन माया। मन इच्छा नहिं तिरबिध काया ॥७॥
तब थे अकह अपार अनामी। परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी ॥८॥
मौज उठी रचना हुइ भारी। अलख अगम सतलोक सँवारी ॥९॥
राधास्वामी अगम रूप धर आये। सत्तलोक सतपुरुष कहाये ॥१०॥
अंस दोय यहँ से उतपाने। ब्रह्म और माया नाम कहाने ॥११॥
यह दोउ अंस उतर कर आये। पाँच तत्त गुन तीन मिलाये ॥१२॥
सत्तपुरुष की अज्ञा लीन्ही। तीन लोक रचना उन कीन्ही ॥१३॥
जीव अंश सतपुर से आई। माया ब्रह्म मांग कर लाई ॥१४॥
तन मन इन्द्री संग बँधाया। इच्छा भोगन माहिं फँसाया ॥१५॥
परम पुरुष का भेद न पाया। करम धरम में बहु भटकाया ॥१६॥
सब जिव यौं भोगैं चौरासी। जोत निरंजन डाली फाँसी ॥१७॥
संत वचन माने जो कोई। फाँस काट जावे घर सोई ॥१८॥
सुरत शब्द की कार कमाओ। सत्तलोक की आसा लाओ ॥१९॥
सतसँग कर धारो परतीती। संत चरन की पालो प्रीती ॥२०॥
सतगुरु रूप निरख हिय अंतर। राधास्वामी नाम सुमिर जिय अंतर ॥२१॥
मन और सुरत होयँ तब निरमल। शब्द शब्द पौड़ी चढ़ चल चल ॥२२॥
चढ़ चढ़ पहुंचे सतगुरु देसा। काल करम का छूटे लेसा ॥२३॥
मन माया सब वार रहाई। तीन लोक के पार न जाई ॥२४॥
परले महापरले गत नाहीं। काल और महाकाल रहे ठाहीं ॥२५॥

सत्तलोक वह देश अनूपा। सुरत धरे जहँ हंस सरूपा ॥ २६॥
दरस परस अरु अमीं अहारा। मलय सुगंध शब्द झनकारा ॥ २७॥
अस २ सूरत देख बिलासा। गई अधर किया निज पद बासा ॥ २८॥
निज पद है वह राधास्वामी। बार २ उन चरन नमामी ॥ २९॥
भाग आपना कहा सराहूं। राधास्वामी महिमा क्यौंकर गाऊँ ॥ ३०॥
अब यह आरत पूरन कीनी। राधास्वामी चरनन रहूं अधीनी ॥ ३१॥

॥ शब्द बत्तीसवाँ ॥

मेरे गुरु दयाल उदार की गत मत नहीं कोइ जानता।
का से कहूं यह भेद मैं चित से नहीं कोइ मानता ॥ १ ॥
जग मैं अँधेरा घोर है माया का भारी शोर है।
काल और करम भरज़ोर है भरमौं मैं जिव भरमावता ॥ २ ॥
तीरथ बरत मैं भरमते मंदिर में मूरत पूजते।
पोथी किताबैं ढूँढ़ते निज भेद नहिं कोइ पावता ॥ ३ ॥
कोइ मौन साधैं जप करैं कोइ पंच अगिन धूनी तपैं।
कोइ पाठ होम और जग करैं कोइ ब्रह्मज्ञान सुनावता ॥ ४ ॥
कोइ देबी देवा गावते कोइ राम कृष्ण धियावते।
कोइ प्रेत भूत मनावतें कोइ गङ्गा जमुना न्हावता ॥ ५ ॥
कोइ दान पुन्न करावते ब्रहमन्न भेख खिलावते।
कोइ भजन गाय सुनावते कोइ ध्यान मन में लावता ॥ ६ ॥
यह सब जो पिछली चाल हैं काल और करम के जाल हैं।
इन में पड़े बेहाल हैं सब जीव धोखा खावता ॥ ७ ॥
जो चाहे तू उद्धार को सच्चे गुरू को खोज लो।
कर प्रीत और परतीत तू फिर चरन सरन समावता ॥ ८ ॥
राधास्वामी नाम सम्हार ले गुरु रूप हिरदे धार ले।
सुत सब्द मारग सार ले गुरु महिमा निस दिन गावता ॥ ९ ॥

सतसंग कर चित चेत कर गुरु प्रीत कर हिय हेत कर।
मन काल मारो रेत कर सुर्त शब्द माहिं लगावता ॥ १० ॥
गुरु तुझ पै मेहर दया करैं पल पल तेरी रक्षा करैं।
मन उलट कर सीधा करैं फिर गगन माहीं धावता ॥ ११ ॥
नभ माहिं दर्शन जोत कर त्रिकुटी चरन गुरु परस कर।
सुन माहिं सारँग साज कर बेनी में जाय अन्हावता ॥ १२ ॥
वहाँ से सुरत आगे चली सोहङ्ग मुरली धुन सुनी।
सतपुरुष के चरनन रली धुन सार शब्द सुनावता ॥ १३ ॥
मन थाल लीन सजाय कर और सुरत बाती बनाय कर।
फिर शब्द जोत जगाय कर भर प्रेम आरत गावता ॥ १४ ॥
दृढ़ प्रीत बस्तर साज कर और भाव भक्ती भोग धर।
मन चित से अज्ञा मान कर प्यारे सतगुरू को रिझावता ॥ १५ ॥
फिर अलख अगम को धाइया घर आदि अंत जो पाइया।
राधास्वामी चरन समाइया धुरधाम संत कहावता ॥ १६ ॥
गुरु महिमा क्योंकर गाइया राधास्वामी मेहर कराइया।
निज देश अपना पाइया धन धन्य भाग सरावता ॥ १७ ॥

॥ सावन ॥

सावन मास मेघ घिरि आये। गरज गरज धुन शब्द सुनाये ॥ १ ॥
रिम झिम बरषा होवत भारी। हिय विच लागी बिरह कटारी ॥ २ ॥
प्रीतम छाय रहे परदेसा। बूझत रही नहिं मिला सँदेसा ॥ ३ ॥
रैन दिवस रहुं अति घबराती। कसक कसक मेरी कसकै छाती ॥ ४ ॥
कासे कहूं कोइ दरद न बूझे। बिन पिया दरस नहीं कछु सूझै ॥ ५ ॥
चमके बीज तड़प उठे भारी। कस पाऊँ पिय प्रान अधारी ॥ ६ ॥
रोवत बीते दिन और राती। दरद उठत हिय में बहु भांती ॥ ७ ॥
ढूंढ़त ढूंढ़त बन बन डोली। तब राधास्वामी की सुन पाई बोली ॥ ८ ॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेसा। शब्द पकड़ जाओ उस देसा ॥ ९ ॥

सुरत शब्द मारग दरसाया । मन और सुरत अधर चढ़वाया ॥१०॥
कर सतसंग खुले हिय नैना। प्रीतम प्यारे के सुने वहिं बैना ॥११॥
जब पहिचान मेहर से पाई । प्रीतम आप गुरू बन आई ॥१२॥
दया करी मोहिं अंग लगाया । दुक्ख दरद सब दूर हटाया ॥१३॥
क्या महिमा मैं राधास्वामी गाऊँ। तन मन वारूँ बल २ जाऊँ॥ १४ ॥
भाग जगे गुरु चरन निहारे। अब कहुं धन २ राधास्वामी प्यारे॥ १५॥

॥ होली ॥

होली खेलूंगी सतगुरु साथ । सुरत मन चरन लगाई ॥ १ ॥
करम जाल को जार । भरम की धूल उड़ाई ॥ २ ॥
गुनन गुलाल उड़ाय । शब्द का रंग चढ़ाई ॥ ३ ॥
प्रेम नशे में चूर । चरन गुरु रहुं लिपटाई ॥ ४ ॥
सतगुरु बचन पुकार । जगत में धूम मचाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी महिमा गाय । सरन में निस दिन धाई ॥ ६ ॥
राधास्वामी नाम सुनाय । काल से जीव बचाई ॥ ७ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

हे गुरू मैं तेरे दीदार का आशिक़ जो हुआ ।
मन से बेज़ार सुरत वार के दीवाना हुआ ॥ १ ॥
इक नज़र ने तेरी ए जाँ मुझे बेहाल किया ।
लैला के इश्क़ में मजनूं सा परेशान किया ॥ २ ॥
मैं हूं बीमार मेरे दर्द का नहिं और इलाज ।
मेरे दिल ज़ख़्म का मर्हम तेरी बोली है इलाज ॥ ३ ॥
तेरे मुखड़े की चमक ने किया मन को नूरां ।
सूरज और चाँद हज़ारौं हुए उस्से ख़िज़लां ॥ ४ ॥
जग में इस चक्र ज़माने का यह दस्तूर हुआ ।
प्रेमी प्रीतम के चरन लाग के मशहूर हुआ ॥ ५ ॥

हिर्स दुनियाँ की मेरे दिल से हुई है सब दूर।
तेरे दर्शन की लगन मन में रही है भर पूर ॥ ६ ॥
वाह वाह भाग जगे गुरु चरनन सुर्त मिली।
चंद्र मंडल को वहीं फोड़ के गगना में पिली ॥ ७ ॥
राग और रागिनी मैं ने सुने अन्तर जाकर।
मेरे नज़दीक हुए हिंदु मुसलमाँ काफ़िर ॥ ८ ॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

अर्श पर पहुंच कर मैं देखा नूर। काल को मार कर मैं फूँका सूर ॥ १ ॥
दैँह की सुध गई जो सुर्त चढ़ी। जाके बैठी जहाँ कि पहले थी ॥ २ ॥
निज गली यार के जो आशिक़ हैं। भीड़ से अब एकाँत लाऊँ मैं ॥ ३ ॥
जो कहूं मैं सो कान दे के सुनो। सुर्त खैँचो चढ़ाओ धुन को सुनो ॥ ४ ॥
सिर में है तेरे बाग़ और सतसंग। सैर कर जल्द ले गुरू का रङ्ग ॥ ५ ॥
तान पुतली को आँख को मत खोल। चढ़ के आकाश का दुआरा खोल ॥ ६ ॥
जब चढ़े सुर्त तेरी अंदर यार। देह की सैर कर व देख बहार ॥ ७ ॥
अचरजी सैर है तेरे बीचे। पृथ्वी ऊपर है आस्माँ नीचे ॥ ८ ॥
बंक नाल होके आगे सुर्त चली। तिरकुटी पहुंच कर गुरू से मिली ॥ ९ ॥
रूप सूरज का लाल क्या बरनूँ। सहस सूरज हैं उसके इक रोमूँ ॥ १० ॥
आगे चल सुर्त सुन्न में पहुंची। धुन किंगरी व सारँगी की सुनी ॥ ११ ॥
कुंड अमृत भरे नज़र आये। हँस रूप होय मोती चुन खाये ॥ १२ ॥
सुन्न को छोड़ कर चली आगे। पहुंची महासुन्न जहाँ सोहँग जागे ॥ १३ ॥
हाल वहाँ का मैं क्या कहूं क्या है। जानता है कि वही जो पहुंचा है ॥ १४ ॥
रास्ते में वहाँ अँधेरा है। सतगुरु संग ही निवेड़ा है ॥ १५ ॥
सतगुरु संग ते किया मैदाँ। काल देख उनको होगया हैराँ ॥ १६ ॥
सुर्त चढ़कर गुफ़ा में पहुंची धाय। धुन सोहँग सुनी मुक़ाम को पाय १७
इस मुक़ाम अचरजी को पाय मिली। खोल खिड़की को अंदरून चली ॥ १८ ॥
आगे चल सत्तलोक पहुंची धाय। और अमीं का अहार दमदम खाय १९

आगेइसकेअलखअगमहैमुक़ाम। तिसपरेहैगाराधास्वामीनाम॥२०॥
यह मुक़ामहै अकहअपारअनाम। संतबिनकौन पा सकेयह धाम॥२१॥
भेद सब इस जगह तमाम हुआ। सब हुए चुप्प मैं भी चुप्प हुआ॥२२॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

निज रूप पूरे सतगुरू का प्रेम मन में छा रहा।
बचन अमृत धार उन के सुन अमीं में न्हा रहा ॥१॥
जब से चरनौं में लगा और धूर चरनौं की लई।
मन के अंतर का अँधेरा मैल सब जाता रहा ॥२॥
मुखड़ा सुहावन क़द्द सीधा चाल अति शोभा भरी।
तेज़ रोशन सीने अन्दर मन को घायल कर रहा ॥३॥
जो किया सतसंग सतगुरु और बचन पूरे सुने।
दीन दुनियाँ झूँठी लागी और न उनका ग़म रहा ॥४॥
पिंड का सब भेद पोशीदा मुझे ज़ाहिर हुआ।
मेहर से पूरे गुरू के काम मेरा बन रहा ॥ ५ ॥
सुर्त ने जब धुन को पकड़ा आस्माँ पर चढ़ गई।
हो गई क़ाबिल वहां पर फिर न कोई ग़म रहा ॥६॥

सुर्त अवाज़ को पकड़ के गई। नभ पै पहुंची व जानकार हुई॥७॥
देखीव्हाँपरअजब नवीन बहार। और अनुभवजगा हुई सरशार॥८॥
दुक्ख जन्मऔरमरनकीतकलीफ़ात। होगई दूर औरगई आफ़ात॥९॥
भेद अंतर का मूझपै हाल खुला। जबकिसतगुरुसेमैंसवालकिया॥१०॥
देँहको ख़ाक की मैं छोड़ गया। कालभीथकके मुझसे बाज़रहा ॥११॥
सुर्त आकाश पर चढ़ी इक बार। कर्म कारज गए हुई करतार॥१२॥
मेरे सतगुरु ने जब करी किरपा। पदसेजाकरमिलीवियोग गया ॥१३॥
करमी शर्ई निमाज़ी क्या जानैं। भेद अभ्यासी आप पहिचानैं ॥१४॥
विद्यावान सब रहे मूरख। अंतरी भेद को न जानैं कुछ ॥१५॥

संशय में सब जगत रहा कूड़ा। रहा बाचक न पाया गुरु पूरा॥१६॥
पायेसतगुरु उसीकाजागाभाग। बाक़ीबादऔरबिवादमेंरहेलाग॥१७
राधास्वामी गुरु ने की किरपा। भाग जागा है मेरा अब धुर का॥१८॥

॥ शब्द ॥

मेरे प्यारे गुरू दातार। मँगता द्वारे खड़ा ॥ १ ॥
मैं रहा पुकार पुकार। मेहर कर देखो ज़रा ॥२॥
मोहिं दीजे भक्ती दान। काल दुख बहुत दिया ॥३॥
मेरे तड़प उठी हिय माहिं। दरस को तरस रहा ॥ ४ ॥
बरसाओ घटा अपार। प्रेम रँग दीजे बहा ॥ ५ ॥
सुत भीजे अमी रस धार। तन मन होवे हरा ॥ ६ ॥
मेरा जनम सुफल होजाय। तुम गुन गाऊँ सदा ॥ ७ ॥
मैं नीच अधम नाकार। तुम्हरे द्वारे पड़ा ॥ ८ ॥
मेरी बिनती सुनो धर प्यार। घट उमँगाओ दया ॥९॥
राधास्वामी पिता हमार। जल्दी पार किया ॥१०॥

॥ शब्द ॥

मेरे प्यारे रँगीले सतगुरु। मेरी सुरत चुनरिया रँग दो ॥१॥
प्रेम सिंध तुम अगम अपारा। मोहिं प्रेम दिवानी करदो ॥२॥
रंग भरे रँगही बरसाओ। मेरे मन की कलसिया भरदो ॥३॥
मन मोहन निज रूप तुम्हारा। मेरे हिये मुकर में धरदो ॥४॥
मन माया से अलग बचा कर। मोहिं अजर अमर धुर घर दो ॥५॥
बहु दिन बीते करत पुकारा। मेरी आसा पूरन करदो ॥ ६ ॥
काल करम मोहिं बहु भरमावत। पाँचो चोर पकड़ दो ॥ ७ ॥
जित जाऊँ तित काल भुलावत। चरनन में चित मोर जकड़ दो ॥८॥
तुम दाता क्यों देर लगाओ। अब तो जल्दी कर दो ॥ ९ ॥
कहाँ लग कहूँ कहन नहिं आवे। माँगूँ सो मोहिं बर दो ॥ १० ॥
राधास्वामी प्रीतम प्यारे। मोहिं नित२ अपना सँग दो ॥ ११ ॥

॥ शब्द ॥

राधास्वामी मेरी सुनो पुकारा। घट प्रीत बढ़ाओ सारा ॥ १ ॥
दृढ़ परतीत चरन में दीजे। किरपा कर अपना कर लीजे ॥ २ ॥
भजन भक्ति कुछ बन नहिं आवत। लोभ मोह मोहिं अति भरमावत॥३
मेरा बल कुछ पेश न जावे। मान ईरषा नित्त सतावे ॥ ४ ॥
यह मन बैरी सदा भुलावे। समझ न लावे भटका खावे ॥५॥
छिन रूखा छिन फीका होवे। माया मोह नींद में सोवे ॥ ६ ॥
बहुत जगाऊँ कहन न माने। प्रेम भक्ति की सार न जाने ॥ ७ ॥
सेवा में नित आलस करता। फिर फिर रोग भोग में गिरता ॥८॥
नित नित भरमन में भरमाई। सतसँग बचन न चित्त समाई ॥९॥
कुमति अधीन हुआ अब यह मन। कौन सुधारे इसको गुरु बिन ॥१०॥
याते करूँ पुकार पुकारी। हे राधास्वामी मोहिं लेव सम्हारी ॥११॥
दीन अधीन पड़ी तुम द्वारे। तुम बिन अब मोहिं कौन सुधारे॥१२॥
चरन बिना नहिं ठौर ठिकाना। जैसे काग जहाज़ निमाना ॥१३॥
तुम बिन और न कोई आसर। राधास्वामी २ गाऊँ निस बासर॥१४॥
अब तो लाज तुम्हैं है मेरी। सरन पड़ी होय चरनन चेरी ॥१५॥
राधास्वामी पति और पिता दयाला। अपनी मेहर से करो निहाला।

॥ शब्द ॥

बार बार करूँ बेनती राधास्वामी आगे।
दया करो दाता मेरे चित चरनन लागे ॥ १ ॥
जनम जनम रही भूल में नहिं पाया भेदा।
काल करम के जाल में रही भोगत खेदा ॥ २ ॥
जगत जीव भरमत फिरैं नित चारो खानी।
ज्ञानी जोगी पिल रहे सब मन की घानी ॥ ३ ॥
भाग जगा मेरा आदि का मिले सतगुरु आई।
राधास्वामी धाम का मोहिं भेद जनाई ॥ ४ ॥

ऊँचे से ऊँचा देश है वह अधर ठिकानो ।
बिना संत पावे नहीं सुत शब्द निशानी ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम की मोहिं महिमा सुनाई ।
बिरह अनुराग जगाय के घर पहुँचूँ भाई ॥ ६ ॥
साध संग कर सार रस मैं ने पिया अघाई ।
प्रेम लगा गुरु चरन में मन शान्ति न आई ॥ ७ ॥
तड़प उठे बेकल रहूं कस पिया घर जाई ।
दरशन रस नित नित लहूं गहे मन थिरताई ॥ ८ ॥
सुरत चढ़े आकाश में करे शब्द बिलासा ।
धाम धाम निरखत चले पावे निज घर बासा ॥ ९ ॥
यह आसा मेरे मन बसे रहे चित्त उदासा ।
विनय सुनो किरपा करो देओ चरन निवासा ॥ १० ॥
तुम बिन कोइ समरथ नहीं जासे माँगूँ दाना ।
प्रेम धार बरषा करो खोलो अमृत खाना ॥ ११ ॥
दीन दयाल दया करो मेरे समरथ स्वामी ।
शुकर करूँ गावत रहूं नित राधास्वामी ॥ १२ ॥

॥ शब्द ॥

कैसे करूँ चरन में विनती । मेरे औगुन जायँ नहीं गिनती ॥ १ ॥
मैं भूला चूका भारी । गुरु बचन चित्त नहिं धारी ॥ २ ॥
माया के रंग रँगीला । मन इन्द्री भोग रसीला ॥ ३ ॥
तन मन धन सँग बहु फूला । गुरु चरनन मारग भूला ॥ ४ ॥
यौं बीत गये दिन सारे । रहा भरमत जगत उजाड़े ॥ ५ ॥
सुध सतगुरु देश न लीनी । रहा माया संग अधीनी ॥ ६ ॥

मद मोह माल भरमावत । नित काम क्रोध सँग धावत ॥७॥
निज लोभ लहर में बहता । जग जीवन सँग दुख सहता ॥८॥
गुरु भक्ती रीत न जानी । गुरु सतगुरु सीख न मानी ॥९॥
गुरु दाता भेद बतावें । नित सतसंग बचन सुनावें ॥१०॥
यह ढीठ निडर नहिं चेते । धोखे संग आपा रेते ॥११॥
गुरु का भय भाव न लावे । निज मान भोग रस चावे ॥१२॥
क्या कीजै बस नहिं चाले । कस काटूँ मन जंजाले ॥१३॥
मेरे राधास्वामी दयाल गुसाईं । वे काटैं मन परछाईं ॥१४॥
दे चरन ओट किरपा कर । मोहिं लेहिं बचा अपना कर ॥१५॥
बिन राधास्वामी और न दीखे । जो लेवे छुड़ा मन जम से ॥१६॥
फिर फिर मैं बिनती धारूँ । बिन राधास्वामी और न जानूँ ॥१७॥
हे पिता मेहर करो पूरी । मोहिं कर लो चरनन धूरी ॥१८॥
मन भोग छुड़ाओ मुझ से । तुम चरन पकड़ रहूँ जिय से ॥१९॥
तन मन के बिकार निकारो । तुम दाता देर न धारो ॥२०॥
बहु दुख मैं अब तक पाये । नित मन में रहूँ मुरझाये ॥२१॥
अब कहाँ लग कहूँ बनाई । तुम राधास्वामी करो सहाई ॥२२॥
मन सूरत चरन लगाओ । अब मोहिं अधम को निबाहो ॥२३॥
मैं पाप किये बहु भारी । धर छिमा करो उद्धारी ॥२४॥
किरपा कर मोहिं उबारो । मेरे औगुन चित्त न धारो ॥२५॥
मेरे राधास्वामी पिता दयाला । दरशन दे करो निहाला ॥२६॥
तन मन से न्यारा खेलूँ । तुम चरनन सूरत मेलूँ ॥२७॥
घट में मेरे प्रेम बढ़ाओ । निज रूप मोहिं दिखलाओ ॥२८॥
तब जनम सुफल होय मेरा । मैं राधास्वामी दर का चेरा ॥२९॥

घट प्रेम की बरषा कीजे । मन सूरत गुरु रँग भींजे ॥३०॥
मैं नीच अजान अनाड़ी । तुम चरनन आन पड़ा री ॥३१॥
मेरी बिनती सुनो पुकारी । अब कीजे दया बिचारी ॥३२॥
मेरे राधास्वामी परम उदारा । करो मुझ पर मेहर अपारा ॥३३॥
यह जीव निबल और मूरख । गुरु को नहिं जाने रक्षक ॥३४॥
तुम अपनी ओर निहारो । मोहिं राधास्वामी पार उतारो ॥३५॥

॥ होली ॥

मैं तो होली खेलन को ठाढ़ी, स्वामी प्यारे झट पट खोलो किवाड़ी १
प्रेम रंग की बरषा कीजे, भींजे सुरत हमारी ॥ २ ॥
देर देर बहु देर भई है, कहाँ लग करूँ पुकारी ॥ ३ ॥
तड़प तड़प जिया तड़प रहा है, दर्शन देव दिखा री ॥ ४ ॥
सुंदर रूप लखूँ अद्भुत छवि, होवे घट उजियारी ॥ ५ ॥
ऋतु फागुन अब आय मिली है, नइ नइ फाग खिला री ॥ ६ ॥
राधास्वामी परम दयाला, चरनन लेव मिला री ॥ ७ ॥
बिन्ती करूँ दोउ कर जोड़ी, करलो प्रेम दुलारी ॥ ८ ॥

॥ होली ॥

होली खेलत सतगुरु संग, पिरेमन रंग भरी ॥ १ ॥
अबीर गुलाल उड़ावत चहुँदिस, भर भर डालत रंग ॥ २ ॥
पाँच तत्त पिचकारी छोड़ी, गुन तीनौं हुए तंग ॥ ३ ॥
मन इन्द्री को नाच नचावत, करत काल से जंग ॥ ४ ॥
सतगुरु प्रेम धार हिये अंतर, गुरु का सीखा ढंग ॥ ५ ॥
मेहर करी गुरु चरन लगाया, फूल रही अँग अँग ॥ ६ ॥
राधास्वामी महिमा नित हिय जिय से, गावत उमँग उमंग ॥ ७ ॥

॥ होली ॥

सुरत आज खेलत फाग नई ॥ टेक ॥

शब्द रूप हिरदे धर अपने, गुरु रँग राच रही ॥ १ ॥
धुन की डोर पकड़ घट चढ़ती, मान ईरषा सकल दही ॥ २ ॥
राधास्वामी बचन लगें अति प्यारे, चरनन लाग रही ॥ ३ ॥
खेलत खेलत गुरु पद पहुंची, रंग गुलाल बही ॥ ४ ॥
सुन्न सिखर चढ़ भँवरगुफा पर, सत्तनाम की मेहर लई ॥ ५ ॥
हंसन साथ मिली अब रँग से, अलख अगम के पार गई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया निज धारी, प्रेम का दान दई ॥ ७ ॥

॥ होली ॥

सुरत प्यारी खेलन आई फाग। धार गुरु चरनन में अनुराग ॥ १ ॥
प्रेम रँग भर भर लइ पिचकार। छोड़ती चहुंदिस उमँग सम्हार ॥ २ ॥
सुरत का लाई अबिर गुलाल। चरन गुरु कुमकुम भर २ डाल ॥ ३ ॥
काम और क्रोध उड़ाई धूर। करम और भरम किये सब दूर ॥ ४ ॥
गाल दे काल हटाया हाल। दया ले काटा माया जाल ॥ ५ ॥
सुरत अब चढ़ती गगन मँझार। करत वहाँ गुरु से हेत पियार ॥ ६ ॥
मिली सतगुरु से जा सतलोक। अलख और अगम का पाया जोग ॥ ७ ॥
चरन राधास्वामी कीन्हा प्यार। प्रेम का फगुआ लीन्हा सार ॥ ८ ॥

कबीर साहब के शब्द

॥ शब्द पहिला ॥

मन तू क्यौं भूला रे भाई। तेरी सुध बुध कहाँ हिराई ॥ १ ॥
जैसे पंछी रैन बसेरा बसे बृच्छ में आई।
भोर भये सब आप आप को जहाँ तहाँ उड़ि जाई ॥ २ ॥
सुपने में तोहिं राज मिल्यो है हाकिम हुकुम दुहाई।
जाग पड़ा जब लाव न लसकर पलक खुले सुध पाई ॥ ३ ॥
मात पिता बंधू सुत तिरिया ना कोई सगा सगाई।
यह तो सब स्वारथ के संगी झूठी लोक बड़ाई ॥ ४ ॥
सागर माहीं लहर उठत है गिनता गिनो न जाई।
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो दरिया लहर समाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

मानत नहिं मन मोरा साधो। मानत नहिं मन मोरा रे ॥टेक॥
बार बार मैं मन समझाऊँ। जगमें जीवन थोड़ा रे ॥ १ ॥
या देही का गरभ न कीजे। क्या साँवर क्या गोरा रे ॥ २ ॥
बिना भक्ति तन काम न आवे। कोट सुगंध चमोरा रे ॥ ३ ॥
या माया का गरभ न कीजे। क्या हाथी क्या घोड़ा रे ॥ ४ ॥
जोड़ जोड़ धन बहुत बिगूचे। लाखन कोट करोड़ा रे ॥ ५ ॥
दुबधा दुरमत और चतुराई। जनम गयो नर बौरा रे ॥ ६ ॥
अजहूं आन मिलो सतसंगत। सतगुरु मान निहोरा रे ॥ ७ ॥
लेत उठाय पड़त भुइँ गिर गिर। ज्यौं बालक बिन कोरा रे ॥ ८ ॥
कहैं कबीर चरन चित राखो। ज्यौं सूई में डोरा रे ॥ ९ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

ऐसी दिवानी दुनियाँ, भक्ति भाव नहिं बूझै जी ॥ १ ॥
कोइ आवे तो बेटा माँगे; यही गुसाँईं दीजै जी ॥ २ ॥
कोई आवे दुक्ख का मारा, हम पर किरपा कीजै जी ॥ ३ ॥
कोइ आवे तो दौलत माँगे, भैंट रुपइया लीजै जी ॥ ४ ॥
कोई करावे ब्याह सगाई, सुनत गुसाँईं रीझै जी ॥ ५ ॥
साँचे का कोइ गाहक नाहीं, झूँठे जक्त पतीजै जी ॥ ६ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, अंधों को क्या कीजै जी ॥ ७ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

समझ नर मूढ़ विगारी रे ॥ टेक ॥

आया लाहा कारने, तैं क्यों पूँजी हारी रे ॥ १ ॥
गर्भवास विनती करी, सो तैं आन विसारी रे ॥ २ ॥
माया देख तू भूलिया, और सुंदर नारी रे ॥ ३ ॥
बड़े साह आगे गये, ओछा ब्योपारी रे ॥ ४ ॥
लौंग सुपारी छाँड़ के, क्यों लादी खारी रे ॥ ५ ॥
तीरथ बरत में भटकता, नहिं तत्त विचारी रे ॥ ६ ॥
आन देव को पूजता, तेरो होगी ख्वारी रे ॥ ७ ॥
क्या ले आया क्या लेचला, करके पल्ला भारी रे ॥ ८ ॥
कहैं कबीर जग यों चला, जैसे हारा जुवारी रे ॥ ९ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

क्या माँगूँ कुछ थिर न रहाई । देखत नैन चल्यो जग जाई ॥१॥
इक लख पूत सवा लख नाती । ता रावन घर दिया न बाती ॥२॥
लंका सा कोट समुद्र सी खाई । ता रावन की खबर न पाई ॥३॥
सोने का महल रूपे का छाजा । छोड़ चले नगरी के राजा ॥४॥
कोइ करो महल कोई करो टाटी । उड़ जाय हंस पड़ी रहै माटी ॥५॥
आवत संग न जात सँगाती । कहा भये दल बाँधे हाथी ॥६॥
कहैं कबीर अंत की बारी । हाथ झाड़ ज्यों चला जुवारी ॥७॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

जायगा मैं जानी, मन मेरे तू जायगा मैं जानी ॥
आवैगी कोइ लहर लोभ की डूबेगा बिन पानी ॥ १ ॥
राज करंते राजा जैहैं रूपावंती रानी ॥
बेद पढ़ंते पंडित जैहैं कथा सुनंते ज्ञानी ॥ २ ॥
जोगी जैहैं जंगम जैहैं जैहैं तपी संन्यासी ॥
कहैं कबीर सत भक्त न जैहैं ज़िन की मत ठहरानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

पी ले प्याला हो मतवाला, प्याला नाम अमी रस का रे ॥ टेक ॥
बालपना सब खेल गँवाया, तरुन भया नारी बस का ॥ रे १ ॥
वृद्ध भया कफ़ बाइ ने घेरा, खाट पड़ा नहिं जाय खिसका रे ॥२॥
नाभ कँवल बिच है कस्तूरी, जैसे मिरग फिरे बन का रे ॥ ३ ॥
बिन सतगुरु इतना दुख पाया, बैद मिले नहिं इस तन का रे ॥४॥
मात पिता बंधू सुत तिरिया, संग नहीं कोइ जाय सका रे ॥५॥
जब लग जीवे गुरु गुन गा ले, धन जोबन दिन है दस का रे ॥६॥
चौरासी जो उबरा चाहे, छोड़ कामिनी का चसका रे ॥ ७ ॥
कहैं कबीर सुनो भाइ साधो, नख सिख पूर रहा बिष का रे ॥ ८ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

जाउँ मैं या जग की चतुराई ॥ टेक ॥

साईं को नाम न कबहूं सुमिरे, जिन यह जुगत बताई ॥ १ ॥
जोड़त दाम काम अपने को, हम खैहैं लड़का बिलसाई ॥ २ ॥
सो धन चोर मूस ले जावे, रहा सहा ले जाय जँवाई ॥ ३ ॥
यह माया जैसे कलवारिन, मद्य पिलाय रखै बौराई ॥ ४ ॥
इक तो पड़े धूल में लोटैं, एक कहैं चोखी दे माई ॥ ५ ॥

सुर नर मुनि माया छल मारे, पीर पैगम्बर को धर खाई ॥ ६ ॥
कोइ इक भाग बचे सतसंगत, हाथ मले तिन को पछिताई ॥ ७ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, ले फाँसी हमहूं को आई ॥ ८ ॥
गुरु की दया साध की संगत, बच गये अभय निशान बजाई ॥ ९॥

॥ शब्द नवाँ ॥

तन धर सुखिया कोइ ना देखा, जो देखा सो दुखिया हो ।
उदय अस्त की बात कहत हैं, सबका किया बिवेका हो ॥ १॥
घाटे बाढ़े सब जग दुखिया, क्या गिरही बैरागी हो ।
सुकदेव अचारज दुख के डर से, गर्भ से माया त्यागी हो ॥ २॥
जोगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना हो ।
आसा तृष्ना सब को ब्यापे, कोई महल न सूना हो ॥ ३॥
साँच कहूं तो कोई न माने, झूठ कहा नहिं जाई हो ।
ब्रह्मा बिस्नु महेश्वर दुखिया, जिन यह राह चलाई हो ॥ ४॥
अवधू दुखिया भूपति दुखिया, रंक दुखी बिपरीती हो ।
कहैं कबीर सकल जग दुखिया, संत सुखी मन जीती हो ॥ ५॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

मानुष जनम सुधारो साधो, धोखे काहे बिगाड़ो हो ।
ऐसा समय बहुरि नहिं पईहो, जनम जुआ मति हारो हो ॥१॥
गुड़ा गुड़ी के ख्याल जनि भूलो, मूल तत्त लौ लाओ हो ।
जब लग घट से परचे नाहीं, तब लग कुछ नहिं पाओ हो ॥२॥
तीरथ ब्रत और जप तप सँजम, या करनी मत भूलो हो ।
करम फंद में जुग जुग पड़िहो, फिर फिर जोनि में झूलो हो ॥३॥
ना कुछ न्हाया ना कुछ धोया, ना कुछ घंट बजाया हो ।
ना कुछ नेती ना कुछ धोती, ना कुछ नाचे गाया हो ॥ ४ ॥
सिंगी सेल्ही भभूत और बटुआ, साँईं स्वाँग से न्यारा हो ।
कहैं कबीर मुक्ति जो चाहो, मानो शब्द हमारा हो ॥ ५ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

जिनके नाम ना है हिये ॥ टेक ॥

क्या होवे गल माला डाले, कहा सुमिरनी लिये ॥ १ ॥
क्या होवे पुस्तक के बाँचे, कहा संख धुन दिये ॥ २ ॥
क्या होवे काशी में बस के, क्या गंगा जल पिये ॥ ३ ॥
होवे कहा बरत के राखे, कहा तिलक सिर दिये ॥ ४ ॥
कहँ कबीर सुनो भाई साधो, जाता है जम लिये ॥ ५ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

देखो जग बौराना साधो, गुरु का मरम न जाना ॥ टेक ॥
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना ।
आपुस में दोउ लड़े मरत हैं दुबिधा में लिपटाना ॥ १ ॥
बहुत मिले मोहिं नेमी धरमी प्रात करैं अस्नाना ।
आतम छोड़ पषाने पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना ॥ २ ॥
एक जो कहिये पीर औलिया पढ़ें किताब कुराना ।
करैं मुरीद क़बर बतलावें उनहूं खुदा न जाना ॥ ३ ॥
हिन्दू की दया मेहर तुरकन की दोनों घर से भागी ।
यह करैं ज़िबह वह झटका मारें आग दोऊ घर लागी ॥ ४ ॥
या विधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावैं स्याना ।
कहें कबीर सुनो भाइ साधो इन में कौन दिवाना ॥ ५ ॥

॥ शब्द तेरहवाँ ॥

साधो पांड़े निपुन क़साई ॥ टेक ॥

बकरी मार भेड़ को धावे, दिल में दरद न आई ॥ १ ॥
कर अस्नान तिलक दे बैठे, बिधि से देबि पुजाई ॥ २ ॥
आतम मार पलक में बिनसे, रुधिर की नदी बहाई ॥ ३ ॥
अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सभा माहिं अधिकाई ॥ ४ ॥

इन से गुरु दिक्षा सब मांगे, हंसी आवे मोहिं भाई ॥ ५ ॥
पाप करन को कथा सुनावैं, करम करावें नोचा ॥ ६ ॥
हम तो दोऊ परसपर दीठा, बाँधे उनको जम जग बीचा ॥ ७ ॥
गाय बधे सो तुरक कहावे, यह क्या इन से छोटे ॥ ८ ॥
कहें कबीर सुनो भाइ साधो, कलि में ब्राह्मण खोटे ॥ ९ ॥

॥ शब्द चौदहवाँ ॥

नइहरवाँ हम को नहिं भावे ॥ टेक ॥
साँई की नगरी परम अति सुन्दर जहां कोइ जाय न आवे, चाँद सुरज ज़हाँ पौन न पानी को सँदेस पहुंचावे। दरद यह साँई की सुनावे ॥ १।
आगे चलों पंथ नहिं सूझै पीछे दोष लगावे, केहि बिधि ससुरे जावँ मोरी सजनी बिरहा ज़ोर जनावे। विषय रस नाच नचावे ॥ २
बिन सतगुरु अपना नहिं कोई को यह राह बतावे, कहत कबीर सुनो भाइ साधो सपने न प्रीतम पावे। तपन यह जिय की बुझावे ॥३

॥ शब्द पन्द्रहवाँ ॥

कोइ प्रेम की पैंग झुलाओ रे ॥ टेक ॥
भुज के खंभ और प्रेम के रस से मन महबूब झुलाओ रे ॥ १ ॥
सूहा चोला पहिर अमोला पिया घट पिया को रिझाओ रे ॥ २ ॥
नैनन बादर की झर लाओ श्याम घटा उर छाओ रे ॥ ३ ॥
आवत आवत सुरत की राह पर फ़िकर पिया को सुनाओ रे ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो पिया को ध्यान चित लाओ रे ॥ ५ ॥

॥ शब्द सोलहवाँ ॥

करो जतन सखी सांईं मिलन की ॥ टेक ॥
गुड़िया गुड़वा सूप सुपलिया, तजदे बुध लड़कइयाँ खेलन की ॥ १ ॥
देवता पित्तर भुइयां भवानी, यह मारग चौरासी चलन की ॥ २ ॥
ऊँचा महल अजब रँग बंगला, साइँ की सेज वहाँ लगी फुलन की ॥ ३ ॥

तनमनधनसबअरपनकरवहां, सुरत सम्हार पंड़ पइंयांसजन की ॥४॥
कहें कबीर निर्भय होय हंसा, कुंजी बतादूँ ताला खुलन की ॥५॥

॥ शब्द सत्रहवां ॥

गुरु बिन दाता कोइ नहीं जग माँगन हारा ।
तीन लोक ब्रह्मान्ड में सब के भरतारा ॥ १ ॥
अपराधी तीरथ चले क्या तीरथ तारे ।
काम क्रोध मद ना मिटा क्या देह पखारे ॥ २ ॥
कागज़ की नौका बनी बिच लोहा भारे ।
शब्द भेद जाने नहीं मूरख पच हारे ॥ ३ ॥
बंस मनोरथ पिया मिले घट भया उजारा ।
सतगुरु पार उतारिहैं सब संत पुकारा ॥ ४ ॥
पाहन को क्या पूजिये यामें क्या पावे ।
अठसठ के फल घर मिलैं जो साध जिंवावे ॥ ५ ॥
कहें कबीर बिचार के नर अंध खल डोले ।
अंधे को सूझै नहीं घट ही में बोले ॥ ६ ॥

॥ शब्द अट्ठारहवां ॥

लखे रे कोइ बिरला पद निरबान ॥ टेक ॥
तीन लोक में यह जम राजा, चौथे लोक में नाम निशान ॥ १ ॥
याहि लखत इन्द्रादिक थक गये, ब्रह्मा थक गये पढ़त पुरान ॥ २ ॥
गोरख दत्त वशिष्ट व्यास मुनि, शम्भू थक गये धर धर ध्यान ॥ ३ ॥
कहें कबीर लखे कोइ बिरला, सतगुरु लग गये जिन के कान ॥ ४ ॥

॥ रेखता, शब्द उन्नीसवां ॥

भक्ति सब कोइ करे भरमना ना टरे; भरम जंजाल दुख दुन्द भारी ॥१॥
काल के जाल में जक्त सब फँस रहा; आस की डोर जम देत डारी ॥२॥

ज्ञान सूझै नहीं शब्द बूझै नहीं, सरन ओटा नहीं गर्ब धारी ॥३॥
ब्रह्म चीन्हे नहीं भरम पूजत फिरे, हिये के नैन क्यौं फोर डारी ॥४॥
काट सिर जीव घर थाप निरजीव को,जीव के हतन अपराध भारी॥५॥
जीव का दर्द बेदर्द कसके नहीं, जीभ के स्वाद नित जीव मारी ॥६॥
एक पग ठाढ़ कर जोर विनती करे,रच्छ बलजाउँ मैं सरन तिहारी॥७॥
वहाँ कुछ है नहीं अरज़ अंधा करे, कठिन डंडौत नहिं टरत टारी ॥८॥
यही आकर्म से नर्क पापी पड़े, करम चंडाल की राह न्यारी ॥९॥
धन्य सौभाग जिन साध संगत करी,ज्ञानकी दृष्टि लीजै विचारी॥१०॥
सत्त दावा गहो आप निरभय रहो,आपको चीन्ह लख नाम सारी॥११
कहैं कबीर तू सत्त को नज़र कर, बोलता ब्रह्म सब घट उजारी ॥१२॥

॥ शब्द बीसवाँ ॥

जाग री मेरी सुरत सोहागिन जागरी ॥ टेक ॥
क्या तुम सोवत मोह लोभ में उठ के भजनियाँ में लाग री ॥ १ ॥
चित से शब्द सुनो सरवन दे उठत मधुर धुन राग री ॥ २ ॥
दोउ कर जोर सीस चरनन दे भक्ति अचल वर माँग री ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो जगत पीठ दे भाग री ॥ ४ ॥

॥ शब्द इक्कीसवाँ ॥

करो रे मन वा दिन की तदबीर ॥ टेक ॥
जब जमराजा आन अड़ेंगे नेक धरत नहिं धीर ॥ १ ॥
मार मार सौंटन प्रान निकासत नैनन भरि आयो नीर ॥ २ ॥
भवसागर एक अगम पन्थ है नदिया बहत गंभीर ॥ ३ ॥
नाव न बेड़ा लोग घनेरा खेवट है बेपीर ॥ ४ ॥
घर तिरिया अरधंगी बैठी मात पिता सुत धीर ॥ ५ ॥
माया मुलक की कौन चलावै संग न जात सरीर ॥ ६ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो माफ़ करो तक़सीर ॥ ७ ॥

॥ रेख़्ता, शब्द बाईसवाँ ॥

हमन हैं इश्क़ मस्ताना हमन को होशियारी क्या।
रहैं आज़ाद या जग से हमन दुनिया से यारी क्या ॥ १ ॥
जो बिछुड़े हैं पियारे से भटकते दर बदर फिरते।
हमारा यार है हम में हमन को इन्तिज़ारी क्या ॥ २ ॥
ख़लक़ सब नाम अपने को बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है हमन दुनिया से यारी क्या ॥ ३ ॥
न पल बिछुड़ैं पिया हम से न हम बिछुड़ैं पियारे से।
उन्हीं से नेह लागी है हमन को बेकरारी क्या ॥ ४ ॥
कबीरा इश्क़ का माता दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाज़ुक है हमन सिर बोझ भारी क्या ॥ ५ ॥

॥ शब्द तेईसवाँ ॥

मिलना कठिन है कैसे मिलूँगी पिया जाय ॥ टेक ॥
समझ सोच पग धरूँ जतन से बार बार डिग जाय।
ऊँची गैल राह रपटीली पावँ नहीं ठहराय ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा देखत मन सकुचाय।
नइहर वास बसूं पीहर में लाज तजी नहिं जाय ॥ २ ॥
अधर भूम जहाँ महल पिया का हम पै चढ़ो न जाय।
धन भइ बारी पुरुष भये भोला सुरत झकोला खाय ॥ ३ ॥
दूती सतगुरु मिले बीच में दीन्हों भेद बताय।
दास कबीर पिया से भेंटे सीतल कंठ लगाय ॥ ४ ॥

॥ शब्द चौबीसवाँ ॥

छाँड़ दे मन बौरा डगमग ॥ टेक ॥
अब तो जरे मरे बन आवे लीन्हों हाथ सिंधोरा।
प्रीत प्रतीत करो दृढ़ गुरु की सुनो शब्द घनघोरा ॥ १ ॥

होय निसंक मगन होय नाचे लोभ मोह भ्रम छाँड़े ।
सूरा कहा मरन सौं डरपे सती न संचय भाँड़े ॥ २ ॥
लोक लाज कुल की मरजादा यही गले मेँ फाँसी ।
आगे होय पग पीछे धरिहो होय जगत में हाँसी ॥ ३ ॥
अगिन जरे ना सती कहावे रन जूझे नहिं सूरा ।
बिरह अगिन अंदर परचारे तब पावे पद पूरा ॥ ४ ॥
यह संसार सकल जग मैला नाम गहे तेइ सूचा ।
कहैं कबीर भक्ति मत छाँड़ो गिरत परत चढ़ ऊँचा ॥ ५ ॥

॥ रेख़ता, शब्द पचीसवाँ ॥

सुख सिंध की सैर का स्वाद तब पाइ है चाह का चौतरा भूल जावे ।
बीज के माहिं ज्योँ बृक्ष बिस्तार यौँ चाह केमाहिं सब रोग आवे ॥१
दृढ बैराग में होय आरूढ़ मन चाह के चौतरे आग दीजे ।
कहैं कब्बीर यौं होय निरबासना तत्त सौं रत्त होय काज कीजे ॥ २ ॥

॥ रेख़ता, शब्द छब्बीसवाँ ॥

सूर संग्राम को देख भागे नहीँ देख भागे सोई सूर नाहीँ ।
काम और क्रोध मद लोभ सौं जूझना मँडा घमसान तहाँ खेत माहीँ १
सील और साँच संतोष शाही भये नाम शमशेर तहाँ खूब बाजे ।
कहैं कब्बीर कोइ जूझि है सूरमाँ कायराँ भीड़ तहाँ तुर्त भाजे ॥२॥

॥ रेख़ता, शब्द सत्ताईसवाँ ॥

साध का खेल तो बिकट बैँड़ा मती सती और सूरत की चाल आगे ।
सूर घमसान है पलक दो चार का सती घमसान पल एक लागे॥१॥
साध संग्राम है रैन दिन जूझना देह पर्यंत का काम भाई ।
कहैँ कब्बीर टुक बाग ढीली करे उलट मन गगनसौँ ज़मीँ आई ॥२॥

॥ शब्द अट्ठाईसवाँ ॥

साधो भाई जीवत ही करो आसा ॥ टेक ॥

जीवत समझे जीवत बूझे जीवत मुक्ति निवासा।
जियत करम की फाँस न काटी मुए मुक्ति की आसा ॥ १ ॥
तन छूटे जिव मिलन कहत है सो सब झूँठी आसा।
अबहूं मिला सो जबहूं मिलेगा नहिं तो जमपुर बासा ॥ २ ॥
दूर दूर ढूँढ़े मन लोभी मिटै न गर्भ तरासा।
साध संत की करे न बंदगी काटैं करम की फाँसा ॥ ३ ॥
सत्त गहे सतगुरु को चीन्हे सत्तनाम बिस्वासा।
कहैं कबीर साधन हितकारी हम साधन के दासा ॥ ४ ॥

॥ शब्द उन्तीसवाँ ॥

भक्ती का मारग झीना रे ॥ टेक ॥

नहिं अचाह नहिं चाहना चरनन लौ लीना रे ॥ १ ॥
साधन के सतसंग में रहे निस दिन भीना रे ॥ २ ॥
शब्द मैं सुर्त ऐसे बसे जैसे जल मीना रे ॥ ३ ॥
मान मनी को यौं तजे जैसे तेली पीना रे ॥ ४ ॥
दया छिमा संतोष गहे रहे अति आधीना रे ॥ ५ ॥
परमारथ मैं देत सिर कुछ बिलम न कीना रे ॥ ६ ॥
कहैं कबीर मत भक्ति का परघट कह दीना रे ॥ ७ ॥

॥ शब्द तीसवाँ ॥

सतगुरु हो महाराज मोपै साँईं रँग डारा ॥ टेक ॥

शब्द की चोट लगी मेरे मन मैं बेध गयो तन सारा ॥ १ ॥
औषध मूल कछू नहिं लागे क्या करे बैद बिचारा ॥ २ ॥
सुर नर मुनि जन पीर औलिया कोई न पावे पारा ॥ ३ ॥
दास कबीर सर्ब रंग रँगिया सब रंग से रंग न्यारा ॥ ४ ॥

॥ शब्द इकतीसवाँ ॥

गुरू ने मोहिं दीन्हीं अजब जड़ी ॥ टेक ॥

सो जड़ी मोहिं प्यारी लगत हैं अमृत रसन भरी ॥ १ ॥
काया नगर अजब इक बंगला तामें गुपृत धरी ॥ २ ॥
पाँचो नाग पचीसो नागिन सूँघत तुरत मरी ॥ ३ ॥
या कारे ने सब जग खायो सतगुरु देख डरी ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो ले परिवार तरी ॥ ५ ॥

॥ शब्द बत्तीसवाँ ॥

आगे समझ पड़ेगा भाई ॥ टेक ॥

यहाँ अहार उद्र भर खायो बहु विधि माँस बढ़ाई ॥ १ ॥
जीव जन्तु रस मार खात हो तनिक दरद नहिं आई ॥ २ ॥
यहाँ तो पर धन लूट खात हो गल बिच फाँस लगाई ॥ ३ ॥
तिन के पीछे तीन पियादा छिन छिन ख़बर लगाई ॥ ४ ॥
साध संत की निंदा कीन्हा आपन जनम नसाई ॥ ५ ॥
पैर पैर पर काँटा धसि है यह फल आगे आई ॥ ६ ॥
कहत कबीर सुनो भई साधो दुनिया है दुचिताई ॥ ७ ॥
साँच कहै सो मारा जावे झूठे जग पतियाई ॥ ८ ॥

तुलसी साहब के शब्द ॥

नर तन संग अंग बिनसन को ॥ टेक ॥

यह धन धाम कुटुँब और काया, माया तज बन बास बसन को॥ १ ॥
खीर खाँड़ घृत पिंड सँवारा, छूटे तन पल माहिं नसन को॥२॥
माही मरातिब हुकुम रहे सोइ, कोइ मंदिर नहिं दीप चसन को ॥३॥
तू तुलसी कहो केहि लेखन में, जाता जग जम जाल फँसन को ॥४॥

॥ रेख़्ता ॥

क्या फिरत है भुलाना दिन चार में चलाना।
काया कुटुँब सब लोग यह जग देख क्यौं भुलाना ॥ १ ॥
धन माल मुल्क घनेरे कह कर गये बहुतेरे।
कितने जतन कर बढ़े घट तंत ना तुलाना ॥ २ ॥
हुशियार हो दिवाने चलना मँज़िल बिहाने।
बाक़ी रहे पै आवता ज़मराज का बुलाना ॥ ३ ॥
लिखते घड़ी घड़ी कागज़ क़लम चढ़ी।
तुलसी हुकुम सरकार का कह देत हूं उलाना ॥ ४ ॥

॥ रेख़्ता ॥

दिन चार है बसेरा जग में न कोई तेरा।
सब ही बटाऊ लोग हैं उठ जायँगे सबेरा ॥ १ ॥
अपनी करो फ़िकर चलने के जो ज़िकर।
रहने का यहाँ न काम है फिर जा करो न फेरा ॥ २ ॥
तन में पवन बसेई जावे हवा नस देही।
टुक जीवने के कारने दुख सहत क्यौं घनेरा ॥ ३ ॥

सुख देख क्यौं भुलाना कुछ दिन रहे पै जाना ।
जैसे मुसाफ़िर रात रह कर जात है सवेरा ॥ ४ ॥
क्या सोवता पड़ा जमद्वार पै खड़ा ।
तुलसी तयारी भोर कर फिर रात को अँधेरा ॥ ५ ॥

॥ अड़ियल ॥

देखो दृष्ट पसार सार कुछ जग में नाहीं ।
दिना चार का रंग संग नहिं जावे भाई ॥ १ ॥
धन सम्पत परिवार काम एको नहिं आवे ।
अरे हाँरे तुलसी दीपक संग पतंग प्रान छिन में तज जावे ॥ २ ॥

॥ अड़ियल ॥

फूले फूले फिरैं देख धन धाम बड़ाई ।
तन फुलेल और तेल चाम को चुपड़ैं भाई ॥ १ ॥
दिना चार का खेल मिले फिर ख़ाक में ।
अरे हाँरे तुलसी पकड़ फ़रिश्ते करैं सलाई आँख में ॥ २ ॥

॥ अड़ियल ॥

लोभ लोग पच मरे कहो को खोज लगावे ।
इन्द्री रस सुख स्वाद भोग नीके कर भावे ॥ १ ॥
राम राम की टेक भेष सब जक्त पुकारा ।
अरे हाँरे तुलसी जीवत मिले न मुक्ति मुए को कहँ लबारा ॥ २ ॥

॥ झूलना ॥

अरे देख निहार बज़ार है रे जग बीच न काम कोइ आवता है ॥ १ ॥
सुत मात पिता नर नारि त्रिया देख अंत को संग न जावता है ॥ २ ॥
तुलसीदास विचार जमफाँस है रे बिधि बाँधि के काल चबावता है ॥ ३ ॥

॥ झूलना ॥

इस जग में बूझ बिचार ले रे नहिं साथ तेरे कुछ जावता है ॥ १ ॥

अरे देख उलफ़त का मत झूठा यही ख़्वाब का खेल कहावता है ॥ २॥
तुलसीदास यह दम से स्वाँस है रे सोइ ग़म के गोले चलावता है ॥ ३॥

॥ सवैया ॥

तेल फुलेल करे रस केल सो माया के फ़ेल में सार भुलानो ॥ १ ॥
मात पिता सुत नार निहार सो झूँठ पसार को देख फुलानो ॥ २ ॥
यह दिन चार बिचार न लार सो भूल असार के संग तुलानो ॥ ३ ॥
तासे कहे तुलसी निज के तन छूट गयो जम देत उलानो ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

दृष्ट पसार के देख तुही जग माहिं रह्यो कोइ बूझ अमाना ॥१॥
पंडो भमीषन भीम बली गये खोज गलो केहि राह समाना ॥२॥
रावन लंक पती पै हती सो रती भर संग न देख निदाना ॥३॥
तू केहि लेखे में देख कहूं तुलसी सतसंग से होत न हाना ॥४॥

॥ शब्द ॥

इक दिन जाना वे जाना टुक बाक़ी बाद चलाना ॥ टेक ॥
सुख सम्पत यह सब जग लूटे छूटे माल ख़ज़ाना ॥ १ ॥
धन माया अपनी तू बिचारे मारे मौत निशाना ॥ २ ॥
माल मुलक हाथी और घोड़े छोड़े साज समाना ॥ ३ ॥
तलबी हुकम तगादा लावे खावे काल निदाना ॥ ४ ॥
सब सुन्दर तज महल अटारी नारी नेह भुलाना ॥ ५ ॥
चलत बार कुछ संग न लीन्हा कीन्हा हंस पयाना ॥ ६ ॥
झूँठी अंग उलफ़त मन मूढ़ा बूड़ा जनम जहाना ॥ ७ ॥
तुलसी तुच्छ तनक तन स्वाँसा आस अनंत बँधाना ॥ ८ ॥

॥ शब्द ॥

कोइ नहिं अपना रे अपना, अरे यह जक्त रैन का सुपना ॥ १ ॥
मट्टी में मट्टी मिल जैहै, पैहै करम कलपना ॥ २ ॥

काया विनस ख़बर नहिं दमकी, जम की डगर डरपना ॥ ३ ॥
बंधन जाल जुगन जम देहैं, करिहैं काल थरपना ॥ ४ ॥
छूटे जब सतगुरु चरनन पर, तन मन सीस अरपना ॥ ५ ॥
लागी रहे बिरह संतन की, ज्यौं जल मीन तड़पना ॥ ६ ॥
सुंदर सुख सन्मुख सूरज के, सूरत अजपा जपना ॥ ७ ॥
मारग मुकर महल दरपन में, मन में माल परखना ॥ ८ ॥
तुलसी मँज़िल मूल कहाँ सूझै, बूझै एक हरफ़ ना ॥ ९ ॥

॥ शब्द ॥

चेत सवेरे चलना बाट ॥ टेक ॥
मन माली तन बाग़ लगाया, चलत मुसाफ़िर को बिलमाया ।
बिष के लड्डू ताहि खवावे, लूट लिया स्वादौं के चाट ॥ १ ॥
तन सराय में मन उरझाना, भटियारी के रूप लुभाना ।
निस बासर वाही सँग रहता, कर हिसाब सतगुरु की हाट ॥ २ ॥
ज्ञान का घोड़ा बनाय के लीजे, प्रेम लगाम ताहि मुख दीजे ।
सुरत एड़ दे आगे चलना, भौसागर का चौड़ा पाट ॥ ३ ॥
क्या सोवे उठ साहब सुमिरो, दसो दिसा काल निज घेरो ।
तुलसी कहत चेत नर अंधा, अब क्या पड़ा बिछाये खाट ॥ ४ ॥

॥ शब्द ॥

क्या सोवत ग़ाफ़िल चेत, सिर पर काल खड़ा ॥ टेक ॥
ज़ोर जुलम की रीत बिचारी, कर माया से हेत ॥ १ ॥
जम की ज़बर ख़बर नहिं जानी, बांध नर्क दुख देत ॥ २ ॥
बिनसे बदन अगिन बिच जारे, खीर खांड़ रस लेत ॥ ३ ॥
फिर फिर काल कमान चढ़ावे, मार लेत खुल खेत ॥ ४ ॥
बिष रस रंग संग बहु कीन्हा, कर कर बैस त्रितेत ॥ ५ ॥
बिरध बनाय बूढ़ तन भइया, कारे केस भये सेत ॥ ६ ॥
सुत दारा आक़र अलसाने, बुढ़वा मरे परेत ॥ ७ ॥

छल बल माया कर गई रे, यह दुनिया के हेत ॥ ८ ॥
गनी मान से धनी न चीन्हा, चिड़ियाँ चुग गई खेत ॥ ९ ॥
अब पछताये क्या हो तुलसी, पहिले रहा अचेत ॥ १० ॥

॥ शब्द ॥

जात रे तन बाद बिताना ॥ टेक ॥
छिनछिन उमर घटतदिन राती। सोवत क्या उठ जाग बिहाना ॥१॥
यह देही बालू सम भीती। बिनसत पल बेहोश हैवाना ॥२॥
ज्यौं गुलाल कुमकुम भर मारे। फूँक फूट जिमि जात निदाना ॥३॥
यह तन की अन आस अनारी। तैं बिष फंदन फाँस फँदाना ॥४॥
यह माया काया छिन भंगी। रँग रस कर कर डारत खाना ॥५॥
सुख सम्पत आशक्त इन्द्रिन में। बिष बस चौज मौज मन माना॥६॥
तुलसी ताव दाव नर देही। बासर निस गई भजन न जाना॥७॥

॥ शब्द ॥

गवन गये तज काया रे हंसा ॥ टेक ॥
मातु पिता परिवार कुटँब सब। छोड़ चले धन माया ॥ १ ॥
रंग महल सुख सेज बिछौना। रुचि रुचि भवन बनाया ॥ २ ॥
प्यारे प्रीत मीत हितकारी। कोई काम न आया ॥ ३ ॥
हंसा आप अकेला चाले। जंगल बास बसाया ॥ ४ ॥
पुत्र पंच सब जाति जुरी है। भूमी काठ बिछाया ॥ ५ ॥
चिता बनाय रची घर काया। जल बल खाक मिलाया ॥ ६ ॥
प्रानपती जहाँ डेरा कीन्हा। जो जस कर्म कमाया ॥ ७ ॥
हंसा हंस मिले सरवर में। कागा कुमत समाया ॥ ८ ॥

॥ शब्द ॥

धर नर देह जगत में कछु न बनी रे ॥ टेक ॥
आप अपनपौ को नहिं चीन्हा। लीन्हा मान मनी रे ॥ १ ॥

यह जड़ जीव नीव जुग जुग की। ग़हरी ठान ठनी रे ॥ २ ॥
धृग धन धाम सोन अरु चाँदी । बाँधी पोट घनी रे ॥ ३ ॥
जोर बटोर किया बहुतेरा । इक दिन फ़ना फ़नी रे ॥ ४ ॥
ऐसा जनम पाय कर भूले । यह इन्साफ़ छनी रे ॥ ५ ॥
मन तन धन कोइ काम न आवे । चाम के धाम बनी रे ॥ ६ ॥
तुलसी तुच्छ तजो रँग काँचो । साँचो नाम धनी रे ॥ ७ ॥

॥ रेख़ता ॥

बेद पुरान सब झूठ का खेल है लूट बदफ़ेल सब खाना खाया ॥१॥
भया मन जोश भौ भागवत पढ़े से चढ़ा मन ज्ञान का मान आया ॥२॥
अगम की राह का खोज कीन्हा नहीं रोज रस ज्ञान बस लोभ माया॥३॥
सुनैं जजमान परमान गये खान में मुक्ति नित कहत भइ भूत काया॥४॥
दास तुलसी टुक जीभ के कारने अल्प सुख मान फिर नर्क पाया॥५॥

॥ ग़ज़ल ॥

पूजा और सेवा कर घंट बजावे ।
कर कर पाखंड लोग बहुत रिझावे ॥ १ ॥
तन के तत मंदिर को देखो जाई ।
आतम सा देव जाहि पूजो भाई ॥ २ ॥
पाहन को मूरत का झूठ पसारा ।
पूजैं मूरख बेहोश जनम बिगारा ॥ ३ ॥
अरधे और उरधे बिच करले मेला ।
तुलसी मुश्ताक़ मेहर अद्भुत खेला ॥ ४ ॥

॥ ग़ज़ल ॥

संतन का प्यारा यार न्यारा भाई ।
जहँ नहिं बैराट खोज निरगुन पाई ॥ १ ॥
ब्रह्मा और बेद नहीं जानैं भेवा ।
शंकर और शेष नहीं जानैं देवा ॥ २ ॥

जोगी और ऋषी मुनी पहुँचे नाहीं ।
सिमरित और शास्तर की कौन चलाई ॥ ३ ॥
जहाँ जोती निज निराकार कोई न जावे ।
संत पंथ राह सोई अगम कहावे ॥ ४ ॥
ब्राह्मन और पंडित जग जीव बिचारा ।
जाने क्या भीख माँग पेट सँवारा ॥ ५ ॥
जग का मल मैल माँग जनम बिगारा ।
वही वही सब बैल बहे भव की धारा ॥ ६ ॥
निरगुन और सरगुन का नाहीं खेला ।
संत पंथ तुलसी कहै अगम अकेला ॥ ७ ॥

॥ अड़ियल ॥

वाको खोज गँवार सार जिन किया पसारा ।
रोम रोम ब्रह्मंड कोट छबि रबि उजियारा ॥ १ ॥
अजर अमर वह लोक सोक सब दूर बहावे ।
अरे हाँरे तुलसी राम कृष्न औतार दसो नहिं जाने पावे ॥ २ ॥

॥ अड़ियल ॥

संतमता है सार और सब जाल पसारा ।
परमहंस जग भेष बहे सब मन की लारा ॥ १ ॥
संत बिना नहिं घाट बाट एको नहिं पावे ।
अरे हाँरे तुलसी भटक भटक भ्रम खान संत बिन भव में आवे ॥२ ॥

॥ शब्द ॥

घर सुधि भूल भँवर में आनि पर्यो रे ॥ टेक ॥
जग सुभ असुभ कर्म मति मन्दा फन्दा काल कर्यो रे ॥ १ ॥
आसा नदी वहै तट नाहीं भारी भर्म भर्यो रे ॥ २ ॥
दिन अरु रैन चैन नहिं पावे तृष्ना माहिं मर्यो रे ॥ ३ ॥

लोभ अगिन घर दीन पलीता जीते जनम जस्यो रे ॥ ४ ॥
नर तन पाय परख नहिं कीन्हा भौसिंध नाहिं तस्यो रे ॥ ५ ॥
तुलसी ताव दाव नहिं देखा मन की चाह चख्यो रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द ॥

नर धर देह कुशल कहा कीन्हीं ॥ टेक ॥
साधू संग रंग नहिं राँचे खोटी बुद्धि लटक लौ लीनी ॥ १ ॥
आठों पहर विषय रस माहीं जुग जुग रही री सुरत रस भीनी ॥२ ॥
धुर गुरु आदि उमेद न राखी चाखी चौरस परस न पीनी ॥ ३ ॥
तुलसी तन बरबाद गयो यौं खायो माहुर मरम न चीन्ही ॥ ४ ॥

॥ रेखता ॥

नर का जनम मिलता नहीं गाफ़िल ग़रूरी ना रखो ।
दिन दो बसेरा बास है आख़िर फ़ना मरना सही ॥ १ ॥
बेहोश ! मौत सिर पर खड़ी मारे निशाना ताक के ।
हर वक्त शिकारी खेलता जम से रहे सब हार के ॥ २ ॥
घेरा पड़ा है काल का कोई बचन पावे नहीं ।
जग में जुलम तोबा पड़ी इन से पनाह देवे दई ॥ ३ ॥
चलने के दिन थोड़े रहे हर दम नक़ारा कूंच का ।
नहीं तूं तेरा सँगी भया तुलसी तवक्का ना किया ॥ ४ ॥

॥ रेखता ॥

जगत ग़ाफ़िल पड़ा सोता रैन दिन ख़ाब में ख़ोता ॥ १ ॥
अवादा आन के पहुंचा ख़ौफ़ जम का नहीं सोचा ॥ २ ॥
फिरे अलमस्त माया में पारधी काल काया में ॥ ३ ॥
गऊ सिंघ बाट में घेरे डगर जिव काल त्यौं हेरे ॥ ४ ॥
बचै कोइ संत के सरना अमर होवे मुकत चरना ॥ ५ ॥
और कहुं ना कुशल भाई कही सब संत गोहराई ॥ ६ ॥

बिना उनके जनम मरना भटक भौसिन्ध में पड़ना ॥ ७ ॥
जुगन जुग कर्म से खाना बढ़े अघ पाप अभिमाना ॥ ८ ॥
जुल्म के हेत हलकारे मनी मग़रूर मतवारे ॥ ९ ॥
पकड़ जम जूतियाँ मारे बहुर बिलकुल नरक डारे ॥१०॥
देख यह तन नहीं मिलता कुटम्ब परिवार में पिलता ॥११॥
समझ सोहबत बड़ी खोटी घसीटै काल धर चोटी ॥१२॥
मोह की फाँस में फन्दे जनम बीते बिबस गन्दे ॥१३॥
बदन ज्यों ओस का पानी अगर यों जान जिन्दगानी ॥१४॥
तेरे संग ना कोई जावे मार हर वक्त क्यों खावे ॥१५॥
कहै तुलसी जनम बीता ख़लक़ जावे हाथ रीता ॥१६॥

॥ अड़ियल ॥

शास्तर बेद पुराण पढ़े ब्याकरण अठारा ॥
पढ़ पढ़ मुए लबार संत गत नाहिं बिचारा ॥ १ ॥
घर घर कथा पुरान जान कर लोभ बड़ाई।
अरे हाँरे तुलसी कुटुंब काज पच मरे पेट भर साँच न आई ॥२॥

॥ अड़ियल ॥

ब्रह्मा बिश्नु महेश शेष सब बाँधे तानी।
नारद सुखदेव ब्यास फाँस कर डारे खानी ॥ १ ॥
हनूमान और जनक भभीषन बचे न भाई।
अरे हाँरे तुलसी ऋषी मुनी को गिने काल धर सब को खाई ॥२॥

॥ अड़ियल ॥

जम है बड़ा कराल चाल कोइ लखे न भाई।
जब कर बाँधे हाथ संत बिन कौन छुड़ाई ॥ १ ॥
बड़े कहो भगवान ताहि को मार गिराया।
अरे हाँरे तुलसी राम कृष्ण औतार दसो नहिं बचने पाया ॥२॥

॥ अड़ियल ॥

संत सरन जो पड़ा ताहि का लगा ठिकाना।
और कहूं नहिं कुशल सकल बैराट चबाना ॥ १ ॥
काल संत से डरे सीस चरनन पर डारा।
अरे हांरे तुलसी बिना संत नहिं ठौर और कहुं नाहिं उबारा ॥२॥

॥ कुंडलिया ॥

यह तन दुरलभ देव को सब कोइ कहत पुकार ॥ टेक ॥
सब कोइ कहत पुकार देव देही नहिं पावैं।
ऐसे मूरख लोग स्वर्ग की आस लगावैं ॥ १ ॥
पुन्य छीन सोइ देव स्वर्ग से नर्क मैं आवैं।
भरमैं चारो खान पुन्य कह ताहि रिझावैं ॥ २ ॥
तुलसी तन मन तत्त लखे स्वर्ग पर करे खखार।
यह तन दुरलभ देव को सब कोइ कहत पुकार ॥ ३ ॥

॥ झूलना ॥

सुन ज्ञान के मान से खान पड़े मन दासता होय सो पावता है ॥ १ ॥
पढ़ जान के नीच निहार लखे सोइ ज्ञान का मूल कहावता है ॥ २ ॥
तुलसी दास जग आस को दूर करे सोई संत की बात चितलावता है ३

॥ झूलना ॥

वेदान्त मैं ब्रह्म बखान कहे बिन संत न हाथ कछु आवता है ॥ १ ॥
जड़ चीन्ह चेतन्य का भेद लखे जड़ गांठ खुले तब पावता है ॥२॥
तुलसीदास आकाश के पार चढ़े सोइ पूरन ब्रह्म कहावता है ॥३॥

॥ झूलना ॥

अरे संत सुपंथ का अंत लखैं जोग ज्ञान मैं ध्यान नहिं आवता है ॥१॥
अलक्ख खलक्क की गम्म नहीं सो झलक्क पलक्क मैं पावता है ॥२
तुलसीदास लखे कोइ सूर पियारा सुत शब्द सिहार निहारता है ॥३

॥ सवैया ॥

सत्त का भेद अभेद अपार सो सार वहि वहि देश को जाने ॥१॥
सूरत सैल से केल करे सो अकेल अपेल की साख बखाने ॥२॥
वेद पुरान नहीं मत ज्ञान सो जोगी को ध्यान न पहुंचे निदाने ॥३॥
ताको कहे तुलसी बिधि खोल सो संत बिना नहिं भेद पिछाने ॥४॥

॥ सवैया ॥

नर को यही ठाट वैराट वनो अस श्रीमत में कह्यो ब्यास बखाना ॥१॥
दुतिया असकंध में बूझ विचार नहीं कह्यो पूजन काठ पषाना ॥२॥
गीता में भाष कही भगवान सो धर्म्म तजा जिन मोहि पिछाना ॥३॥
पूरन ब्रह्म वेदान्त कहे तुहि आप अपनपो आप भुलाना ॥४॥
पाहन पूजत जनम गयो कुछ सूझ पड़ी नहिं लाभ न हाना ॥५॥
आसा से जाय वसे जड़ में जब अन्त समय जड़ माहिं समाना ॥६॥
वेद की रीत से प्रीत करी कर्म कांड रचे वहु जनम सिराना ॥७॥
यह तत ज्ञान कहे तुलसी तैंने पत्थर में परमेश्वर जाना ॥८॥

॥ कवित्त ॥

साध संत है अगाध जीव जन्म जात वाद काल कर्म की उपाध साध सुर्त को लगाय के ॥१॥ कृष्ण क्रोड़न औतार राम कोटिन भये छार वेद ब्रह्मा नहिं पार मार मार लिये खाय के ॥ २ ॥ देवन में महादेव विष्णु नहिं जाने भेव करत काल जाल सेव बाँधे जम धाय के ॥ ३ ॥ संतन के विना साथ उबरे नहिं कोटि भाँत मारे जम जुगन लात तुलसी तरसाय के ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

साध संत से उपाध रहत वेश्या के साथ बड़ा कुटिल है कुपाथ चले पंथ न निहार के ॥१॥ करमन के मैले और विषरस के पेले सो ऐसे हरामखोर दोजख में परत हैं ॥२॥ देखत के नीके और करनी

के फीके सो काढ़ काढ़ टीके उपद्रव को खड़े हैं ॥३॥ खोट मोट मानी आठो गाँठ के हरामी सो ऐसे कुटिल कामी काम रागहू से भरे हैं ॥ ४ ॥ देखत के ज्ञानी क्रूर खान की निशानी अधम ऐसे अभिमानी सो जान हान करत हैं ॥ ५ ॥ साँचे संसार लार संतन से फेर फार तुलसी मुख परत छार छली छिद्र भरे हैं ॥ ६ ॥

॥ शब्द ॥

पंडित भल चारो वेद पढ़े ॥ टेक ॥

गीता ज्ञान भागवत बाँची, जहाँ मछली तहाँ लेत खड़े ॥ १ ॥
कर अस्नान अचार रसोई, हाँड़ी भीतर हाड़ सड़े ॥ २ ॥
भोजन कर जजमान जिमाये, दछिना कारन जाय अड़े ॥ ३ ॥
बकरा मार भवानी पूजैं, मूंड़ ठका बिन गाज पड़े ॥ ४ ॥
यह अनीत आसा तन खोया, पंडित नर्क से नाहिं कढ़े ॥ ५ ॥
चार बरन में ऊँच ठिकाना, जग में मोटे कहत बड़े ॥ ६ ॥
ब्रह्म चीन्ह सोइ ब्राह्मण कहिये, ग़ज़ब जहन्नुम जाय गड़े ॥ ७ ॥
तुलसी पाप पुन्य के मैले, दान धरम मद मोह मढ़े ॥ ८ ॥

॥ शब्द ॥

देखो नर नगर द्वारिका जावे, साँड़ दगन दगवावे ॥ टेक ॥
ब्राह्मन जात बरन में ऊँचे, तन लै अगिन जरावे ॥ १ ॥
छाप दिवाय लेत दोउ भुज पर, बादहिं जनम गँवावे ॥ २ ॥
राम कृष्ण औतार करम बस, सो युध रूप कहावे ॥ ३ ॥
गोपिन साथ भाँति कर क्रीड़ा, ढुंड प्रत्यक्ष दिखावे ॥ ४ ॥
अरजुन भक्तहिं वारे गारे, ऊधो तप समझावे ॥ ५ ॥
का वे गोपी लूटी निलज कर, अरजुन चाँप चढ़ावे ॥ ६ ॥
थोथे बान भये सर केरे, शक्ति हीन गुहरावे ॥ ७ ॥
ग़ैरत गोपी हाय कृष्ण कर, ताल तजे तन गावे ॥ ८ ॥

जो जो उनके परम सनेही, सो सो सब दुख पावे ॥ ९ ॥
आप करम बस काया धारी, और मुक्ति पहुंचावे ॥ १० ॥
बालि हते तेहि बदला दीना, भाल लगो पग पावे ॥ ११ ॥
मार्खो बान पदम चमकत में, छूटत प्रान गँवावे ॥ १२ ॥
जो कोइ इष्ट करे उनहीं को, तुलसी कस कस भावे ॥ १३ ॥
काल कराल कृष्ण औतारी, सब जग को धर खावे ॥ १४ ॥

॥ शब्द ॥

भाई रे बद्रीनाथ नहिं जाना, जहाँ पाखंड परस पषाना ॥ टेक ॥
परबत भूमि कठिन पग छाले, बेहड़ बन दुख खाना ॥ १ ॥
मंदिर मूरत रुचिर बनाई, पारस बरन बखाना ॥ २ ॥
पंडा भीख लेत सब जग से, सो जाँचत जजमाना ॥ ३ ॥
पूजा लोभ दरस के कारन, गढ़ि मूरत पुजवाना ॥ ४ ॥
हर पैरी हरद्वार न पावे, बाँध्यो घाट पखाना ॥ ५ ॥
सीढ़ी पर पानी न्हावन को, बूड़त भेष निदाना ॥ ६ ॥
तन कर मरन मुक्ति कर जाने, बाँधे शास्त्र पुराना ॥ ७ ॥
परभी परम पुनीत विचारे, कुंभ न परख पिछाना ॥ ८ ॥
पारस की प्रतिमा नित गावैं, लोहा संग सोन कहाना ॥ ९ ॥
पंडन को लोहा न मवस्सर, सोन करत नित दाना ॥ १० ॥
यह सब काल छली बल बाज़ी, तीरथ बरत बखाना ॥ ११ ॥
झूंठी रचन रची जग माहीं, सब नर भरम भुलाना ॥ १२ ॥
तुलसी सतसंग परख सरीरा, गुरु बैराट बखाना ॥ १३ ॥
पिंड माहिं सब अंड समाना, सतगुरु शब्द लखाना ॥ १४ ॥

॥ शब्द ॥

अगम नाहिं गुरु बिन सूझ पड़े ॥ टेक ॥
चार बेद पढ़े पुरान अठारा, नौ षट खोज मरे ॥ १ ॥
ज्ञानी भये भरम नहिं छूटा, झूंठा बाद करे ॥ २ ॥

बीस बिस्वास आस करमन की, नहिं प्रण टेक टरे ॥ ३ ॥
काल सनाथी जुग जुग खावे, चर और अचर चरे ॥ ४ ॥
बिन सतसंग संत बिन बेड़ी, बिकट को बिपत हरे ॥ ५ ॥
तज नित नेम अचार भार सिर, निर्मल धरन धरे ॥ ६ ॥
कहैं गुरु शब्द अकास बास पर, सूरत गगन चढ़े ॥ ७ ॥
तन बैराट जीव तरे तुलसी, सहजे भौ उतरे ॥ ८ ॥

॥ होली ॥

सतगुरु मोरी बाँह गहिया, चढ़ि जाऊँ अधर की अटारी अटा ॥टेक॥ करूँ फरियाद दाद सब सुनिहैं जाय पड़ूँगी चरन गह पइयाँ ॥ मोरी सहाय बनाय करँगे मार निकारे बिकार करइया ॥ अमल अलख जब जोर घटा ॥ १ ॥ जब शरमाय हाय कर तोबा तुम्हरी डगर हम नाहिं रुकइया ॥ अब तक़सीर माफ़ मेरी कीजे तुम सतगुरु के हो पास जवइया ॥ हुकम ज़बर के अबर फटा ॥ २ ॥ धाय चली सतगुरु को सँगले अलग भये मारग अटकइया ॥ सबही उपाध आदि की छूटी लूटे सभी नये बाट चलइया ॥ मैं सुमिरन कर नाम रटा ॥३॥ गगन गुफा में धसीरी बसो जब आगे मिले मोहिं गैल बतइया ॥ अंग लगाय संग कर लीन्ही अगम अभय पद पार पठइया ॥ जब तुलसी हिय हेर हटा ॥ ४ ॥

॥ छटका ॥

ब्याकुल बिरह दिवानी, झड़े नित नैनन पानी ॥ टेक ॥
हरदम पीर पिया की खटके, सुध बुध बदन हिरानी ॥ १ ॥
होश हवास नहीं कुछ तन में, बेदम जीव भुलानी ॥ २ ॥
बहु तरंग चित चेतन नाहीं, मन मुरदे की बानी ॥ ३ ॥
नाड़ी वैद बिथा नहिं जाने, क्यौं औषद दे आनी ॥ ४ ॥

हिय में दाग़ जिगर के अंदर, क्या कहुं दरद बखानी ॥ ५ ॥
सतगुरु वैद विथा पहिचाने, बूटी है उनकी जानी ॥ ६ ॥
तुलसी यह रोग रोगिया बूझे, जिन को पीर पिरानी ॥ ७ ॥

॥ लटका ॥

प्रीतम प्रीत पिरानी, दरद कोइ विरले जानी ॥ टेक ॥
डसत भुवंग चढ़त सननननन, ज़हर लहर लहरानी ॥ १ ॥
घनन घनन घन्नाटी आवे, भावे अन्न न पानी ॥ २ ॥
भँवर चक्र की उठत घुमेरैं, फिरे दसो दिस आनी ॥ ३ ॥
अंदर हाल विहाल हलावत, दुरगम प्रीत निभानी ॥ ४ ॥
आशिक़ इशक़ इशक़ आशक़ से, करना मौत निशानी ॥ ५ ॥
मुरदा होकर ख़ाक मिले जब, तब पट अमर लिखानी ॥ ६ ॥
पिया क़ो रोग सोग तन मन में, सतगुरु सुध अलगानी ॥ ७ ॥
तुलसी यह मारग मुशकिल का, धड़ बिन सीस विकानी ॥ ८ ॥

॥ बारहमासा लावनी ॥

आली असाढ़ के मास विरह उठ बादल घहराने। चहुं दिस चमकै बीज विकल पिया के बिन हैराने ॥ खबर बिन धीरज नहिं आवे। तन मन बदन बेहाल विपत में नहिं कोइ कुछ भावे ॥ कहूं नहिं दिलदारन अटके। हरदम पिया की पीर दरस बिन मन मोरा भटके ॥ १ ॥

सखी सावन के मास सोक में सुन्दर घबरानी। रिम झिम बरसै मेह मोर दादुर की सुन बानी ॥ जिगर अंदर जिव लहरावे। तड़पै तन के माहिं हाय पिया खोजै कहाँ पावै ॥ रही हिया में पिया को रट के। हर दम पिया० ॥ २ ॥

भर भादौं झड़ मेघ अखंडित बरसै जलधारा । आवै पिया की पोर नीर नैनौं बहै जल धारा ॥ सुरख सब्र अंखियन में लाली । मारे गोसा तान तीर हिये ज्यौं कसकै भाली ॥ कलेजे अन्दर में खटके । हर दम पिया० ॥ ३ ॥

रितु कुआर के मास आस कागा संग सुध बिसरी । हंस सिरोमन मूल भूल से तज मेवा मिसरी ॥ मरम संगत बिन कहं पाऊँ । बिन सतगुरु के बाट घाट घर चढ़ कैसे जाऊं ॥ सुरत मन क्यौं करके लटके । हर दम पिया० ॥ ४ ॥

कातिक तिल के माँहिं जाइ सोइ सुध बुध दरसावे । अष्ट कँवल दल द्वार पार पद हद सब समझावे ॥ सरन होय सतगुरु की चेली । मैली बुद्धि निकार सार पावे जब लख हेली । चाँदनी हियरे में छटके । हरदम पिया० ॥ ५ ॥

अघ अगहन के मास पाप पुन सब जल जावे । निर्मल नीर बनाय जाय सोइ तिरबेनी न्हावे॥ जब करम के भोग भरम छूटैं । बिन बेनी असनान पकड़ जम घर घर के लूटैं ॥ बचै नहिं कोइ सब को पटके । हर दम पिया० ॥ ६ ॥

पूस पुरष की आस बास बिन नहिं जिव निस्तारा सतगुरु खेवट गैल गवन कर जब जावे पारा ॥ मिलैं जब पिउ परसै प्यारी । सुन्दर सेज बिछाय पिया संग सोवे कर यारी ॥ अरज कर प्रीतम से हटके । हर दम पिया० ॥ ७ ॥

माघ मनोरथ प्रीत परम पद की सुध सम्हारी । ऐसी होय कोइ नारि जगत तज तन मन से न्यारी ॥ सुरत की डोरी लै लावे । मूल मुकर की राह दाव कर सहजहि चढ़ जावे । कुमति कुनबे की बुधि झटके । हर दम पिया० ॥ ८ ॥

फागुन फ़रक निकार यार सँग खेलै खुल होली । आस अबीर उड़ाय गुनन की भर मारे झोली ॥ अरगजा घिस चन्दन लेपै । नीर

सिखर की राह सुरत चढ़ सुन्दर में चेपै ॥ चरन में हित चित्त से गठके । हर दम पिया० ॥ ९ ॥

चतुर सहेली चेत हेत हियरे से मन लावे । पल पल पाले प्रीत रीत पिया को जो रस चावे ॥ अमल कर होवे मतवारी । नशा नैन के माहिं विसर गइ सुध बुध सब सारी ॥ गुरक़ डोरी बाँधे वट के । हर दम पिया० ॥ १० ॥

बुन्द बैसाख की साख सिन्ध गत सन्तन ने गाई । सुन के सज्जन होय समझ कर छाँड़े चतुराई ॥ दीन दिल दुरमत को छोड़े । मन मकरन्द को जान मान तन मन को सब तोड़े ॥ लहर सतसँग की जब चटके । हर दम पिया० ॥ ११ ॥

जबर जेठ की रीत करे कोई किंकर जब होवे । मन के विषम विकार काढ़ के तुलसी सब धोवे ॥ भरम तज भक्ति भजन करना । मन मूरख को बाँध पकड़ कर जीवतही मरना ॥ निकल घट न्यारी होय फटके । हर दम पिया की पीर दरस बिन मन मोरा भटके ॥ १२ ॥

॥ लावनी ॥

पिया दरस बिना दीदार दरद दुख भारी । बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी ॥ टेक ॥ क्या जनम लिया जग माहिं मूल नहिं जाना । पूरन पद को छाँड़ किया जुलमाना ॥ जुग जुग में जीवन मरन आज नरदेही । सुख सम्पति में पार पुरुष नहिं सेई ॥ जग में रहना दिन चार बहुर मरना री । बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी ॥ १ ॥

यह नर तन दुरलभ माहिं हाथ नहिं लाई । जाले अँखियाँ में पड़े करम दुखदाई ॥ पिया है हर दम हिय माहिं परख नहिं पाई । बिन सतगुरु कहो कौन कहे दरसाई ॥ खोजत रहो री दिन रात ढूंढ़ कर हारी । बिन सतगुरु के० ॥ २ ॥

अरी यह मट्टी तन साज समझ बिनसेगा। छिन में छूटे बदन काल गिरसेगा॥ आसा बंधन जग रोज़ जनम धरना री। यह दुख सुख बेड़ी बिषम भोग करना री॥ भुगते चौरासी खान जुगन जुग चारी। बिन सतगुरु के० ॥ ३ ॥

सुत मात पिता नर पुरुष जगत का नाता। यह सब संशय का कोट कुटम दुख दाता॥ टुक जीवन है जग माहिं काल की बाज़ी। इन बातौं में नहिं परम पुरुष है राज़ी॥ पिउ परमारथ सँग साथ सहज तरना री। बिन सतगुरु के० ॥ ४ ॥

कोइ भेटैं दीन दयाल डगर बतलावैं। जेहि घर से आया जीव तहाँ पहुंचावैं॥ दरशन उनके उर माहिं करैं बड़ भागी। उनके तरने की नाव किनारे लागी॥ कहिं वे दाता मिल जाँय करैं भौ पारी। बिन सतगुरु के० ॥ ५ ॥

सतसँग करना मन तोड़ सरन संतन की। अंदर अभिलाषा लगी रहे चरनन की॥ सूरत तन मन से साँच रहे रस पीती। कोइ जावे सज्जन कुफ़र काल को जीती॥ अमृत हर दम कर पान चुए चौधारी। बिन सतगुरु के० ॥ ६ ॥

सतसँग मारग की प्रीत रीत जिन जानी। उन सज्जन पर हूं बार बार कुरबानी॥ निस दिन लौ लागी रहे रमक रस राती। मतवारी मज्जन मुकर मनोरथ माती ॥ ऐसे जिनके सरधान सुरत बलिहारी। बिन सतगुरु के० ॥ ७ ॥

अलि जो समरथ के साथ सरन में आई। सो सूरत परम बिलास करे घट माहीं॥ पिउ प्यारी महल मिलाप रहे दिन राती तुलसी पट भीतर केल करे पिया साथी॥ सुख सम्पति क्या कहुं चैन चरन पर वारी। बिन सतगुरु के धृग जीवन संसारी॥८॥

॥ शब्द ॥

पढ़े क्या बाँच रे तेरे अंदर उपजी न साँच ॥ टेक ॥

पढ़ गुन सोध भागवत गीता फिर जजमानें जाँच रे ॥ १ ॥
नेमी नेम प्रेम रूपयन से ज्यौं कसबिन को नाच रे ॥ २ ॥
पूरन होत कथा जब ऐसे सब जुड़ बैठे पाँच रे ॥ ३ ॥
करत बिचार दंड राजन ज्यौं लूट जगत में गाछ रे ॥ ४ ॥
मोट ग़रीब ग़रज़ लेने से सुथरे दरस न आँच रे ॥ ५ ॥
पंडित मुक्ति करैं यों तुलसी सो जग झूठे साँच रे ॥ ६ ॥

॥ शब्द ॥

भौजल लहर उतंग संग कोइ खोजो रे खोजो ॥ टेक ॥

शिव सनकादि आदि मुनि नारद सारद शेष कुरंग ।
व्यासदत्त सुकदेव दिवाने पावत फिर फिर अंग ॥ १ ॥
शृङ्गी ऋषि पारासर मारे कौन काम ने तंग ।
ऋषी मुनी सब क्रोध कुबुद्धी भयो तपस्या भंग ॥ २ ॥
ब्रह्मा बिष्नु दसो औतारा खुल खुल नच्यो अपंग ।
और जगत जिव कहँ लग बरनूं आसा रंग तरंग ॥ ३ ॥
तुलसी ताब दाव नर देही सुरत गगन चढ़ गंग ।
गुंजत भँवर फूल फुलवारी कँवल अधर लख भ्रंग ॥ ४ ॥

॥ शब्द ॥

गति को लखि पावे संत की ॥ टेक ॥

लखन अरूप रूप दरसावत, अगम सुनावत अंत की ॥ १ ॥
तूल मूल अस्थूल लखावत, ख़बर जनावत कंत की ॥ २ ॥
दृढ़ कर डगर डोर समझावत, तुरत सुझावत पंथ की ॥ ३ ॥
भव भुअंग तज पार चढ़ावत, सत मत नाव अतंत की ॥ ४ ॥
भेष भये सब साध कहावत, भाषत साख जो ग्रंथ की ॥ ५ ॥
शिष्य करैं गुरु घाट न जानैं, तुलसी नहिं गति होत महंत की ॥ ६ ॥

॥ गुरू नानक के शब्द ॥

॥ शब्द पहिला ॥

जगत में झूठी देखी प्रीत ॥ टेक ॥
अपनेही सुख को सव लागे क्या दारा क्या मीत ॥ १ ॥
मेरो मेरो सवहि कहत हैं हित से वाँध्यो चीत ॥ २ ॥
अंतकाल संगी कोइ नाहीं यह अचरच है रीत ॥ ३ ॥
मन मूरख अजहूं नहिं समझत सिख दे हारो नीत ॥ ४ ॥
नानक भवजल पार परे जो गावे गुरु की गीत ॥ ५ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

सव कुछ जीवत को व्यवहार ॥ टेक ॥
मात पिता भाई सुत वन्धू औ पुनि गृह की नार ॥ १ ॥
तन तें प्रान होत जव न्यारे टेरत प्रेत पुकार ॥ २ ॥
आध घड़ी कोउ नहिं राखत घर तें देत निकार ॥ ३ ॥
मृगतृष्ना ज्यों जग रचना है देखो हृदय विचार ॥ ४ ॥
कहे नानक भज सत्तनाम नित जा तें होय उधार ॥ ५ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

रे मन यह साँचो जिय धार ॥ टेक ॥
सकल जगत है जैसे सुपना विनसत लगे न वार ॥ १ ॥
बालू भीत बनाई रच पच रहत नहीं दिन चार ॥ २ ॥
तैसेही यह सुख माया को उरझो कहा गँवार ॥ ३ ॥
अजहुं समझ कुछ विगड़ो नाहिन भज ले गुरु करतार ॥ ४ ॥
कहे नानक निज मत साधन को भाख्यो तोहि पुकार ॥ ५ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

प्रीतम जान लेव मन माहीं ॥ टेक ॥

अपने सुख में सब जग फाँस्यो कोइ काहू को नाहीं ॥ १ ॥
सुख में आन बहुत मिल बैठत रहत चहूं दिस घेरे ॥ २ ॥
बिपत पड़े सबही सँग छाँड़त कोऊ न आवत नेरे ॥ ३ ॥
घर की नार बहुत हित जासे रहत सदा सँग लागी ॥ ४ ॥
जब यह हंस तजी है काया प्रेत प्रेत कर भागी ॥ ५ ॥
या बिधि को ब्यवहार बन्यो है तासो नेह लगायो ॥ ६ ॥
अंत बार नानक बिन सतगुरु कोऊ काम न आयो ॥ ७ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

प्रानी सत्तनाम सुध लेह ॥ टेक ॥

छिन छिन अवधि घटत निस बासर बिनस जात झूठी यह देह ॥१॥
तरुनापा बिषयन सँग खोयो बालपना अज्ञाना।
बृद्ध भयो अजहूं नहिं समझे कौन कुमति उरझाना ॥ २ ॥
मानुष जनम दियो जिस करते सो तैं क्यौं बिसरायो।
मुक्ति होत नर जाके सुमिरे ताको निमिष न गायो ॥ ३ ॥
माया को मद कहा करत है संग न काहू जाई।
नानक कहत चेत चिन्तामनि होइहै अंत सहाई ॥ ४ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

गुरु बिन तेरो कोइ न सहाई ॥ टेक ॥

काकी मात पिता सुत बनिता को काहू का भाई ॥ १ ॥
धन धरनी और सम्पति सगरी जो मान्यो अपनाई ॥ २ ॥
तन छूटे कुछ संग न जाई कहा ताहि लिपटाई ॥ ३ ॥
दीन दयाल सदा दुख भंजन तासौं रुचि न बढ़ाई ॥ ४ ॥
नानक कहत जगत सब मिथ्या ज्यौं सुपने रैनाई ॥ ५ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

उघरा वह द्वारा वाह गुरू परिवारा ॥ टेक ॥

चढ़ गई चंग पतंग संग ज्यौं चन्द चकोर निहारा ॥ १ ॥
सूरत शोर ज़ोर ज्यौं खोलत कुंजी कुलफ केवाड़ा ॥ २ ॥
सूरत धाय धसी ज्यौं धारा पैठ निकस गइ पारा ॥ ३ ॥
आठ अटा की अटारि मँझारा देखा पुरुप नियारा ॥ ४ ॥
निराकार आकार न जोती नहिं जहाँ वेद विचारा ॥ ५ ॥
ओंकार करता नहिं कोई नहिं हूँ काल पसारा ॥ ६ ॥
वह साहिब सब संत पुकारें और पाखंड पसारा ॥ ७ ॥
सतगुरु चीन्ह दीन्ह यह मारग नानक नज़र निहारा ॥ ८ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

मनमुख मन्न अजित्त है दूजे लग्गे जाय ।
तिसनूं सुख सुपने नहीं दुक्खे दुक्ख विहाय ॥ १ ॥
घर घर पढ़ पढ़ पंडित थाके सिद्ध समाध लगाय ।
यह मन बस्स न आवई थक्के करम कमाय ॥ २ ॥
भेषधारी भेष कर थक्के अठसठ तीरथ न्हाय ।
मन को सार जानी नहीं हौं मैं भरम भुलाय ॥ ३ ॥
गुरु परशादी भौ पया वड़भागी वस्या मन आय ।
भौ पये वस मन भया हौं मैं शब्द जलाय ॥ ४ ॥
सच्च रते से निरमले जोती जोत मिलाय ।
सतगुरु मिलिये नाम पाइया नानक सुक्ख वसाय ॥ ५ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

तूँ सुमिरन करले मेरे मनाँ तेरी बीती जात उमर गुरु नाम बिना ।
पंछि पंख बिन हस्ति दंत बिन नारी पुरुष बिना रे ।
बेश्या को पुत्र पिता बिन हीना तैसे प्रानी गुरुनाम बिना रे ॥१॥

देह नैन बिन रैन चन्द बिन धरती मेघ बिना रे।
जैसे पंडित बेद बिहीना तैसे प्रानी गुरु नाम बिना रे ॥ २ ॥
कूप नीर बिन धेनु छीर बिन मन्दिर दीप बिना रे।
जैसे तरवर फल कर हीना तैसे प्रानी गुरु नाम बिना रे ॥ ३ ॥
तू काम क्रोध मद लोभ निवारो छाँड़ो क्रोध अब संत जना रे।
कहैं नानक शाह सुनो भगवन्ता या जग में कोइ नहिं अपना रे ॥४॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

नहिं ऐसा जनम बारंबार ॥ टेक ॥

का जानी कुछ पुन्य प्रगटो तेरो मानुषा अवतार ॥ १ ॥
घटत छिन २ बढ़त पल २ जात न लागत बार ॥ २ ॥
बृच्छ तेँ फल टूट परिहैं बहुर न लागत डार ॥ ३ ॥
भैरवाले सम्हार तन को बिषम ऐँड़ी धार ॥ ४ ॥
बेड़ा बाँधो सुरत को चलि उतरो भौजल पार ॥ ५ ॥
काम क्रोध हंकार तृष्ना तजहु सकल विकार ॥ ६ ॥
दास नानक मान लीजो नाम को आधार ॥ ७ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

काहे रे बन खोजन जाई ॥ टेक ॥

सर्व निवासी सदा अलेपा तो सँग रहत सदाई ॥ १ ॥
पुहुप मध्य जैसे बास रहत है मुकुर माहिं जैसे छाईं ॥ २ ॥
तैसेही गुरु बसत निरन्तर घटहि में खोजो भाई ॥ ३ ॥
बाहर भीतर एकै मानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ ४ ॥
कहे नानक बिन आपा चीन्हे मिटै न भ्रम की काईं ॥ ५ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई ॥ टेक ॥

चंचल तृष्ना संग बसत है यातेँ मन न थिराई ॥ १ ॥

कठिन क्रोध घटही के भीतर या विधि सब विसराई ॥ २ ॥
रतन ज्ञान सब को हर लीन्हा तातैं कछु न बसाई ॥ ३ ॥
जोगी जतन करत सब हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ ४ ॥
जब नानक गुरु भये दयाला तो सब विधि बनि आई ॥ ५ ॥

शब्द तेरहवाँ

मनमुख लहर घर तज्ज विगुच्चे, औराँ के घर हेरे ॥
गृह धर्म गँवाये सतगुरु नाहिं भेटे, दुरमति घुम्मण घेरे ॥
दिशन्तर भवैँ पाठ पढ़ थाका, तृष्ना होय वधेरे ॥
काँची पिंडी शब्द न चोन्हैँ, उदर भरे जैसे ढोरे ॥
बाबा ऐसो रमत रमैँ सन्यासी । गुरु के शब्द एक लिव
लागी । तेरे नाम रते तृप्तासी ॥ रहाव ॥ १ ॥
घोली गेरू रंग चढ़ाया । वस्तर भेष भिषारी ॥
कापड़ फाड़ बनाई खिंथा । झोली माया धारी ॥ २ ॥
घर घर माँगे जग परबोधे । मन अंधे पति हारी ॥
भरम भुलाना शब्द न चीन्हे । जुए बाज़ी हारी ॥ ३ ॥
अंतर अगिन न गुरु बिन बूझै । बाहर फूहर तापे ॥
गुरु सेवा बिन भक्ति न होई । क्यौंकर चीन्हसि आपे ॥ ४ ॥
निंदा कर कर नर्क निवासी । अंतर आतम जापे ॥
अठसठ तीरथ भरम विगूचे । क्यौं मल धोये पापे ॥ ५ ॥
छानी ख़ाक भभूत चढ़ाई । माया का मग जोहै ॥
अंदर बाहर एक न जाने । साँच कहे तौ छोहै ॥ ६ ॥
पाठ पढ़े मुख झूठौं बोले । निगुरे की मत ओ है ॥
नाम न जपई क्यौं सुख पावे । बिन नामैं क्यौं सो है ॥ ७ ।

मूँड़ मुँड़ाय जटा शिष बाँधी, मौन रहे अभिमाना।
मनुवाँ डोले दह दिस धावे, बिन रत आतम ज्ञाना ॥ ८ ॥
अमृत छोड़ महा बिष पीवे, माया का दीवाना।
किरत न मिटई हुकम न बूझे, पशुवाँ माहिं समाना ॥ ९ ॥
हाथ कमंडल कापड़िया, मन तृसना उपजी भारी।
इस्त्री तज कर काम बियापा, चित लाया पर नारी ॥ १० ॥
शिष्य करे पर शब्द न चीन्हे, लम्पट है बाज़ारी।
अंतर बिष बाहर नभ राती, ता जम करे ख़ुवारी ॥ ११ ॥
सो सन्यासी जो सतगुरु सेवे, बिच्चौं आप गँवाये।
छाजन भोजन की आस न करही, अचिंत मिले सो खाये ॥ १२ ॥
बके न बोले छिमा धन संग्रह, तामस नाम जलाये।
धन गिरही सन्यासी जोगी, जो गुरु चरनो चित लाये ॥ १३ ॥
आस निरास रहे सन्यासी, एकस सौं लिव लाये।
शब्द रस पीवे तो शान्ति आवे, निज घर ताड़ी लाये ॥ १४ ॥
मनुवाँ न डोले गुरु मुख बूझे, धावत बरज रहाये।
गृह शरीर गुरु मत्ती खोजे, शब्द पदारथ पाये ॥ १५ ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेश श्रेष्ठ सब, रहे नाम बिचारी।
ख़ानी बानी गगन पताली, जन्ताँ जोत तुम्हारी ॥ १६ ॥
शब्द बिना नहिं छूटस नानक, साँचो तर तू तारी।
सब सुख मुक्त शब्द धुन बानी, सच्च नाम उर धारी ॥ १७ ॥

दादू साहिब के शब्द

॥ शब्द पहिला ॥

दादू जानै न कोई संतन की गति गोई ॥ टेक ॥
अवगति अन्त अन्त अन्तर पट अगम अगाध अगोई ॥ १ ॥
सुन्नी सुन्न सुन्न के पारा अगुन सगुन नहिं दोई ॥ २ ॥
अन्ड न पिन्ड खन्ड ब्रह्मन्डा सूरत सिंध समोई ॥ ३ ॥
निराकार आकार न जोती पूरन ब्रह्म न होई ॥ ४ ॥
उनको पार सार सोइ पइहै मन तन गति पति खोई ॥ ५ ॥
दादू दीन लीन चरनन चित मैं उनकी सरनाई ॥ ६ ॥

॥ शब्द दूसरा ॥

दादू देखा दीदा सब कोई कहत शुनीदा ॥ टेक ॥
हवा हिरस अन्दर बस कीदा तब यह दिल भया सीधा ॥ १ ॥
अनहद नाद गगन गढ़ गरजा तब रस खाया अमीदा ॥ २ ॥
सुखमन सुन्न सुरत महलन में आया अजर अक़ीदा ॥ ३ ॥
अष्ट कँवल दल दृग में दर्शन पाया खुद खुदीदा ॥ ४ ॥
जैसे दूध दूध दधि माखन बिन मथे भेद न घी दा ॥ ५ ॥
ऐसे तत्त मत्त सत साधन तब टुक नशा पिया पीदा ॥ ६ ॥
नहिं वह जोग ज्ञान मुद्रा तत यह गत और पदीदा ॥ ७ ॥
जो कोई चीन्ह लीन्ह यह मारग कारज हो गया जीदा ॥ ८ ॥
मुरशिद सत्त गगन गुरु लखिया तन मन कीन उसी दा ॥ ९ ॥
आशिक़ यार अधर लख पाया हो गया दीदम दीदा ॥ १० ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

जानैं अन्तरजामी अचरज अकथ अनामी ॥ टेक ॥
नौ लख कँवल जुगल दल अन्दर द्वादस साहिब स्वामी ॥ १ ॥
सूरत कड़क कँवल दल नभ पर झटक झटक थिर थामी ॥ २ ॥
सूरत शब्द शब्द में सूरत अगम अगोचर धामी ॥ ३ ॥
कासें कहौं पिया मुख सारा ज्यों तिरिया मुसकानी ॥ ४ ॥
नहिं यह जोग ज्ञान तुरिया तत यह गति अकह कहानी ॥ ५ ॥
चन्द न सूर पवन नहिं पानी क्यौंकर करूँ बखानी ॥ ६ ॥
सुन्न न गगन धरनि नहिं तारा अल्लाह रब नहिं रामी ॥ ७ ॥
कहा कहूं कहिवे की नाहीं जानत सन्त सुजानी ॥ ८ ॥
बेद न भेद भेष नहिं जानत कोऊ देत न हामी ॥ ९ ॥
दादू दृग दीदार हिये के सूरत करत सलामी ॥ १० ॥
मैं पिय प्यारी प्यारे पिया अपने मिल रहे एक ठिकानी ॥ ११ ॥
सूरत सार सिंध लख पाई यह गति बिरले जानी ॥ १२ ॥

॥ शब्द चौथा ॥

दादू दरस दिवाना आरसी यार दिखाना ॥ टेक ॥
आधी रात गगन मध चन्दा तारा खिलत खिलाना ॥ १ ॥
घटकी सुरत चढ़ी ज्यौं चकरी फूट गया अस्माना ॥ २ ॥
लौ लगी जाय महल मध ऊपर सूरत निरत ठिकाना ॥ ३ ॥
मिल गया यार प्यार बहु कीन्हा खुल गया अर्श निशाना ॥ ४ ॥
आदि अन्त देखा मध म्याना क्योंकर करूँ बखाना ॥ ५ ॥
गुप्त बात गुप्तहि भई गाफ़िल अन्दर माहिँ छिपाना ॥ ६ ॥
मैं कुछ कीन्ह लीन्ह सोइ जानत और कहूं नहिं चीन्हा ॥ ७ ॥
दादू पीर मिटी परलै की जनम मरन नहिं माना ॥ ८ ॥

॥ शब्द पाँचवाँ ॥

दादू दिल बिच देखा रूप रंग नहिं रेखा ॥ टेक ॥

हद हद बेद कितेब बखाने मैं कहा बेहद लेखा ॥ १ ॥
मुल्ला शेख पंडित और सैयद यह मुए अपनी टेका ॥ २ ॥
राम रहीम करीम न केशो हरि हज़रत नहिं एका ॥ ३ ॥
वह साहिब सबहिन से न्यारा कोइ कोइ सन्तन देखा ॥ ४ ॥
दादू दीन लीन होय पाया क्या कहुं अगम अलेखा ॥ ५ ॥
जिन २ जाना तिन्ही पिछाना मिट गया मन का धोखा ॥ ६ ॥

॥ शब्द छठवाँ ॥

मेरे तुमहीं राखन हार दूजा कोइ नहीं।
यह चंचल चहुं दिस जाय काल तहीं तहीं ॥ १ ॥
मैं बहुतक किये उपाय निश्चल ना रहे।
जहाँ बरजूँ तहाँ जाय मदमाता बहे ॥ २ ॥
जहाँ बरजूँ तहाँ ज़ाय तुम से ना डरे।
तासे कहा बसाय भावैं त्यों करे ॥ ३ ॥
सकल पुकारैं साध और मैं केता कहा।
गुरु अंकुस माने नाहिं निरभय हो रहा ॥ ४ ॥
मेरे तुम बिन और न कोय जो इस मन को गहे
तुम राखो राखनहार दादू तो रहे ॥ ५ ॥

॥ शब्द सातवाँ ॥

तू स्वामी मैं सेवक तेरा। भावैं सिर दे सूलो मेरा ॥ १ ॥
भावैं करवत सिर पर सार। भावैं लेकर गरदन मार ॥ २ ॥
भावैं गिरवर गगन गिराय। भावैं दरिया माहिं बहाय ॥ ३ ॥
भावैं चहुं दिस अगिन लगाय। भावैं काल दसो दिस खाय ॥ ४ ॥
भावैं कनिक कसौटी देय। दादू सेवक कस कस लेय ॥ ५ ॥

॥ शब्द आठवाँ ॥

दादू देखा मैं प्यारा अगम जो पंथ निहारा ॥ टेक ॥
अष्ट कँवल दल सुरत शब्द में रूप रंग से न्यारा ॥ १ ॥
पिंड ब्रह्मंड और बेद कितेबे पाँच तत्त के पारा ॥ २ ॥
सत्तलोक जहँ पुरुष बिदेही वह साहिब करतारा ॥ ३ ॥
आदि जोत और काल निरंजन इनका वहाँ न पसारा ॥ ४ ॥
राम रहीम रब्ब नहिं आतम मोहमद नहिं औतारा ॥ ५ ॥
सब संतन के चरन सीस धर चीन्हा सार असारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द नवाँ ॥

दादू भेष भुलाना जग सँग कीन्ह पयाना ॥ टेक ॥
षट दर्शन पंडित और ज्ञानी पढ़ पढ़ मुए पुराना ॥ १ ॥
परमहंस जोगी सन्यासी बेद करत परमाना ॥ २ ॥
आतम ब्रह्म कहैं अपने को सब में हमीं समाना ॥ ३ ॥
तासे भवजल पार न पावैं अहम् ब्रह्म को माना ॥ ४ ॥
मन बिहंग की ख़बर न जाना तन बिहंग है बाना ॥ ५ ॥
जग जग्यास मोह मद माते तामें बहु लिपटाना ॥ ६ ॥
जाको भेद बेद नहिं पावे अगम पंथ नहिं जाना ॥ ७ ॥

॥ शब्द दसवाँ ॥

दादू दीन अवाजा जग जिव भेष न लाजा ॥ टेक ॥
शिव सनकादि श्रृङ्गी पाराशर इनका सरो न काजा ॥ १ ॥
यह तन तोर काल का खाजा छिन छिन सिर पर गाजा ॥ २ ॥
सुखदेव व्यास जनक नारद मुनि घट घट उन पर छाजा ॥ ३ ॥
तूँ केहि लेखे माहिं न बचिहै पच पच मरत अकाजा ॥ ४ ॥
बाघ उपाय करे गउ कारन जम दल यहि विधि साजा ॥ ५ ॥

पल में छुट जैहै सुख सम्पत ज्यौं माखी मधु राजा ॥ ६ ॥
रात दिवस धावे धन कारन मरन काल किंत आजा ॥ ७ ॥
जिन कोइ सुरत सत्त लख चीन्हा जनम मरन भव भाजा ॥ ८ ॥
दादू भेद भेष जब छूटे सूरत शब्द समाजा ॥ ९ ॥

॥ शब्द ग्यारहवाँ ॥

दादू कहत पुकारी कोइ माने नाहिं हमारो ॥ टेक ॥
पंडित क़ाजी बेद कितेबें पढ़ पढ़ मुए लबारी ॥ १ ॥
वे तीरथ वे हज को जाते बूड़े भवजल धारी ॥ २ ॥
ईसाई सब धोखा खाया पढ़ अंजील विचारी ॥ ३ ॥
हिंदू तुरुक इसाई तीनौं करम धरम पच हारी ॥ ४ ॥
नूर ज़हूर खुदा हम पाया उतरे भवजल पारी ॥ ५ ॥

॥ शब्द बारहवाँ ॥

दादू दुनिया दिवानी पूजे पाहन पानी ॥ टेक ॥
गढ़ मूरत मंदिर में थापी निव निव करत सलामी ॥ १ ॥
चंदन फूल अच्छत शिव ऊपर बकरा भैंट भवानी ॥ २ ॥
छप्पन भोग लगे ठाकुर को पावत चेत न प्रानी ॥ ३ ॥
धाय धाय तीरथ को धावैं साध संग नहिं मानी ॥ ४ ॥
तातैं पड़े करम बस फंदे भरमे चारो खानी ॥ ५ ॥
बिन सतसंग सार नहिं पावैं फिर फिर भरम भुलानी ॥ ६ ॥

पलटू साहिब की कुन्डलियां

कमठ दृष्ट जो लावई सो ध्यानी परमान ॥ टेक ॥
सो ध्यानी परमान सुरत से अन्डा सेवे ।
आप रहे जल माहिं सूखे में अन्डा देवे ॥ १ ॥
जस पनहारी कलस धरे मारग में आवे ।
कर छोड़े मुख बचन चित्त कलसा में लावे ॥ २ ॥
फनि मनि धरे उतार आप चरने को जावे ।
वह नहिं ग़ाफिल पड़े सुरत मनि माहिं रहावे ॥ ३ ॥
पलटू कारज सब करे सुरत रहे अलगान ।
कमठ दृष्ट जो लावई सो ध्यानी परमान ॥ ४ ॥

२

दीपक बारा नाम का महल हुआ उजियार ॥ टेक ॥
महल हुआ उजियार नाम का तेज बिराजा ।
शब्द किया परकाश मानसर ऊपर छाजा ॥ १ ॥
दसौं दिसा भई सुद्ध बुद्ध भइ निरमल साँचो ।
छूटि कुमति की गाँठ सुमति परघट होय नाचो ॥ २ ॥
होत छतीसो राग दाग़ तिरगुन का छूटा ।
पूरन प्रगटे भाग करम का कलसा फूटा ॥ ३ ॥
पलटू अँधियारी मिट गई बाती दीन्ही टार ।
दीपक बारा नाम का महल हुआ उजियार ॥ ४ ॥

३

बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर ॥ टेक ॥
मगन भया मन मोर महल अठवैं पर बैठा ।
जहाँ उठे सोहंगम शब्द शब्द के भीतर पैठा ॥ १ ॥

नाना उठैं तरंग रंग कुछ कहा न जाई।
चाँद सुरज छिप गये सुखमना सेज बिछाई ॥ २ ॥
छूट गया तन ग्रेह नेह उनही से लागी।
दसवाँ द्वारा फोड़ जोत बाहर होय जागी ॥ ३ ॥
पलटू धारा तेल की मेलत हो गया भोर।
बंसी बाजी गगन में मगन भया मन मोर ॥ ४ ॥

४

धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥ टेक ॥
चादर लीजे धोय मैल है बहुत समानी।
चल सतगुरु के घाट भरा जहाँ निरमल पानी ॥ १ ॥
चादर भई पुरानी दिनो दिन बार न कीजै।
सतसंगत में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै ॥ २ ॥
छूटे तिरगुन दाग़ नाम का कलप लगावे।
चलिये चादर ओढ़ बहुर नहिं भवजल आवे ॥ ३ ॥
पलटू ऐसा कीजिये मन नहिं मैला होय।
धुबिया फिर मर जायगा चादर लीजै धोय ॥ ४ ॥

५

मन महीन कर लीजिये जब पिउ लागै हाथ ॥ टेक ॥
जब पिउ लागैं हाथ नीच होय सब से रहना।
पच्छा पच्छी को त्याग ऊँच बानी नहिं कहना ॥ १ ॥
मान बड़ाई खोय ख़ाक में जीते मिलना।
ग़ाली कोइ दे जाय छिमा कर चुप ही रहना ॥ २ ॥

सब को करे तारीफ़ आप को छोटा जानै।
पहले हाथ उठाय सीस पर सब को आनै ॥ ३ ॥
पलटू वही सोहागिनी हीरा झलकै माथ।
मन महीन कर लीजिये जब पिउ लागैं हाथ ॥ ४ ॥

६

धुआँ का सा धौरेहरा ज्यों बालू की भीत ॥ टेक ॥
ज्यों बालू की भीत ताहि का कौन भरोसा।
ज्यों पक्का फल डार गिरत से लगे न दोसा ॥ १ ॥
कच्चे घड़े ज्यों नीर पानी के बीच बताशा।
दारू के भीतर अगिन जीवन की ऐसी आशा ॥ २ ॥
पलटू नर तन जात है घास के ऊपर सीत।
धुआँ का सा धौरेहरा ज्यों बालू की भीत ॥ ३ ॥

७

चोला भया पुराना आज फटे की काल ॥ टेक ॥
आज फटे की काल तिहूं पर है ललचाना।
तीनों पन गये बीत भजन का मरम न जाना ॥ १ ॥
नख सिख भये सफ़ेद तिहूं पर नाहीं चेतै।
जोर जोर धन धरै गला औरन का रेतै ॥ २ ॥
अब क्या करिहौ यार काल ने किया तगादा।
चलै न एको ज़ोर आन के पहुंचा वादा ॥ ३ ॥
पलटू तेह पर लेत है माया मोह जंजाल
चोला भया पुराना आज फटे की काल ॥ ४ ॥

८

अपनी ओर निभाइये हार पड़ो की जीत ॥ टेक ॥
हार पड़ो की जीत ताहि की लाज न कीजै।
कोटिक वहैं बयार क़दम आगे को दीजै ॥ १ ॥

तिल तिल लागै घाव खेत सों टरै सो नाहीं।
गिर गिर उठै सम्हाल सोई है मरद सिपाही ॥ २ ॥
लड़ लीजै भर पेट कान कुल आप न लावे।
उनको उनके हाथ बड़ौं से सब बन आवे ॥ ३ ॥
पलटू सतगुरु नाम से सच्चो कीजै प्रीत।
अपनी ओर निभाइये हार पड़ो की जीत ॥ ४ ॥

९

सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥ टेक ॥
देखे चारो धाम सबन में पत्थर पानी।
करमन के बस पड़े मुक्ति की राह भुलानी ॥ १ ॥
चलत चलत पग थके छीन भइ अपनी काया।
काम क्रोध नहिं मिटा बैठ कर बहुत अन्हाया ॥ २ ॥
ऊपर डाला धोय मैल दिल बीच समाना।
पत्थर में गया भूल सन्त का मरम न जाना ॥ ३ ॥
पलटू नाहक पच मुए सन्तन में है नाम।
सात पुरी हम देखिया देखे चारो धाम ॥ ४ ॥

१०

सतगुरु सिकलीगर मिलै जब छुटै पुराना दाग़ ॥ टेक ॥
जब छुटै पुराना दाग़ गड़ा मन मुरचा माहीं।
सतगुरु पूरे बिना दाग़ यह छूटै नाहीं ॥ १ ॥
झाँवा लेवै जोग तेग़ को मलै बनाई।
जौहर दिये निकार सुरत का रंद चलाई ॥ २ ॥
शब्द मरकुला करै ज्ञान का कुरमा लावै।
जोग जुगत से मले दाग़ जब मन का जावै ॥ ३ ॥
पलटू सैफ़ को साफ़ कर बाढ़ धरै बैराग।
सतगुरु सिकलीगर मिलै जब छुटै पुराना दाग़ ॥ ४ ॥

११

साहब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥ टेक ॥
केवल भक्ति पियार गुरु भक्ती में राजी।
तजा सकल पकवान खाया दासी सुत भाजी ॥ १ ॥
जप तप नेम अचार करे बहुतेरा कोई।
खाये सिवरी के बेर मुए सब ऋषि मुनि रोई ॥ २ ॥
राजा युधिष्ठिर यज्ञ बटोरा जोरा सकल समाजा।
मरदा सब का मान सुपच बिन घंट न बाजा ॥ ३ ॥
पलटू ऊँची जात का मत कोइ करे अहंकार।
साहब के दरबार में केवल भक्ति पियार ॥ ४ ॥

१२

बैरागिन भूली आप में जल में खोजै राम ॥ टेक ॥
जल में खोजै राम जाय कर तीरथ छाने।
भरमे चारो खूँट नहीं सुध अपनी आने ॥ १ ॥
फूल माहिं ज्यौं बास काठ में अगिन छिपानी।
खोदे बिन नहिं मिले आहि धरती में पानी ॥ २ ॥
दूध माहिं घृत रहै छिपी मिहँदी में लाली।
ऐसे पूरन ब्रह्म कहूँ इक तिल नहिं ख़ाली ॥ ३ ॥
पलटू सतसँग बीच में कर ले अपना काम।
बैरागिन भूली आप में जल में खोजै राम ॥ ४ ॥

१३

संसय रूपी अगिन में जले सकल संसार ॥ टेक ॥
जले सकल संसार जलत नरपति को देखा।
बादशाह उमराव जलैं सइयद और शेख़ा ॥ १ ॥
सुर नर मुनि सब जलैं जलैं ज़ोगी सन्यासी।
पंडित चतुरा जलैं जलैं कनफटा उदासी ॥ २ ॥

जंगम स्योड़ा जलैं जलैं नागा बैरागी।
तपसी दूना जलैं बचे कोइ नाहीं भागी ॥ ३ ॥
पलटू बच गये संत जन जिनके नाम अधार।
संसय रूपी अगिन में जले सकल संसार ॥ ४ ॥

१४

पड़ा रह संत के द्वारे बनत बनत बन जाय ॥ टेक ॥
तन मन धन सब अरपन करके धके धनी के खाय ॥ १ ॥
स्वान बिर्त आवे सोइ खावे रहे चरन लौ लाय ॥ २ ॥
मुरदा होय टरै नहिं टारे लाख कहो समझाय ॥ ३ ॥
पलटूदास काम बन जावे इतने पै ठहराय ॥ ४ ॥

१४

भाग रे भाग फक्कीर के बालके कनक और कामनी बाघ लागा।
मार तोहिं लेयँगे पड़ा चिल्लायगा बड़ा बेकूफ तू नाहिं भागा॥
सिंगी ऋषि से तो मार लिये बचे नहिं कोई जो लाख त्यागा॥
दास पलटू कहे बचेगा सोई जो बैठ सत संग दिन रात जागा॥

॥ दरिया साहिब का शब्द ॥

दरिया दरबारा खुल गया अजर केवाड़ा ॥ टेक ॥
चमकी बीच चली ज्यौं धारा, ज्यौं बिजुली बिच तारा ॥ १ ॥
खुल गये चन्द बन्द बदरी का, घोर मिटा अँधियारा ॥ २ ॥
लौ लगी जाय लगन के लारा, चाँदनी चौक निहारा ॥ ३ ॥
सूरत सैल करे नभ ऊपर, बंकनाल पट फारा ॥ ४ ॥
चढ़ गई चाँप चली ज्यौं धारा, ज्यौं मकरी मकतारा ॥ ५ ॥
मैं मिली जाय पाय प्रिय प्यारा, ज्यौं सलिता जलधारा ॥ ६ ॥
देखा रूप अरूप अलेखा, लेखा वार न पारा ॥ ७ ॥
दरिया दिल दरवेश भये तब, उतरे भवजल पारा ॥ ८ ॥

॥ मीरा बाई के शब्द ॥

मीरा मन मानी, सुरत सैल असमानी ॥ टेक ॥

जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ॥ १ ॥
ज्यौं हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी ॥ २ ॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ॥ ३ ॥
ऐसी पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी ॥ ४ ॥
ऐसा बैद मिले कोइ भेदी, देस बिदेस पिछानी ॥ ५ ॥
तासौं पीर कहौं तन केरी, फिर नहिं भरमौं खानी ॥ ६ ॥
खोजत फिरौं भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ॥ ७ ॥
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीना सुरत सहदानी ॥ ८ ॥
मैं मिल जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ॥ ९ ॥
मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ॥ १० ॥

॥ नाभा जी का शब्द ॥

नाभा नभ खेला, कँवल केल सर सैला ॥ टेक ॥

दरपन नैन सैन मन माँजा, लाजा अलख अकेला ॥ १ ॥
पल पर दल दल ऊपर दामिन, जोत में होत उजेला ॥ २ ॥
अंडा पार सार लख सूरत, सुन्नी सुन्न सुहेला ॥ ३ ॥
चढ़ गई धाय जाय गढ़ ऊपर, शब्द सुरत भया मेला ॥ ४ ॥
यह सब खेल अखेल अमेला, सिंध नीर नद मेला ॥ ५ ॥
जल जलधार सार पद जैसे, नहीं गुरू नहिं चेला ॥ ६ ॥
नाभा नैन औन अन्दर के, खुल गये निरख निहाला ॥ ७ ॥
संत उचिष्ट वार मन झेला, दुर्लभ दीन दुहेला ॥ ८ ॥

॥ सूरदास के शब्द ॥

मुरली धुन गाजा, सूर सुरत सर साजा ॥ टेक ॥

निरखत कँवल नैन नभ ऊपर, शब्द अनाहद बाजा ॥ १ ॥

सुन धुन मेल मुकर मन माँजा, पाया अमीरस झाझा ॥ २ ॥
सूरत संध सोध सत काजा, लख लख संत समाजा ॥ ३ ॥
घट घट कुंज पुंज जहाँ छाजा, पिंड ब्रह्मंड बिराजा ॥ ४ ॥
फोड़ अकाश झललपछ भाजा, उलट के आप समाजा ॥ ५ ॥
ऐसे सुरत निरख निः अक्षर, कोट कृष्ण तहाँ लाजा ॥ ६ ॥
सूरदास सार लख पाया, लख लख अलख अकाया ॥ ७ ॥
सतगुरु गगन गली घर पाया, सिंध में बुन्द समाया ॥ ८ ॥

॥ शब्द ॥

जा दिन मन पंछी उड़ जैहैं ॥ टेक ॥

ता दिन तेरे तन तरवर की सबै पात झड़ जैहैं ॥ १ ॥
या देही का गर्ब न करिये स्यार काग गिध खैहैं ॥ २ ॥
तीन नाम तन विष्ठा कृम होय नातर ख़ाक उड़ैहैं ॥ ३ ॥
कहाँ वह नैन कहाँ वह शोभा कहँ रँग रूप दिखैहैं ॥ ४ ॥
जिन लोगन सौं नेह करत हो सो तोहि देखि घिनैहैं ॥ ५ ॥
जिन पुत्रन को बहु प्रतिपाल्यो देवी देव मनैहैं ॥ ६ ॥
तेहि ले बाँस दियो खोपड़ी में सीस फाड़ बिखरैहैं ॥ ७ ॥
घर के कहत सबेरे काढ़ो भूत होय घर खैहैं ॥ ८ ॥
अजहूं मूढ़ करो सतसंगत संतन में कछु पैहैं ॥ ९ ॥
नर बपु धर जो जन नहिं गुरु के जम के मारग जैहैं ॥ १० ॥
सूरदास संत भजन बिन बृथा सो जनम गँवैहैं ॥ ११ ॥

॥ धरमदास का शब्द ॥

भक्ति दान गुरु दीजिये देवन के देवा हो।
जनम पाय ना बीसरौं करिहौं पद सेवा हो ॥ १ ॥
तीरथ बरत मैं ना करूँ ना देवल पूजा हो।
मनसा बाचा करमना मेरे और न दूजा हो ॥ २ ॥

आठ सिद्ध नौ निद्ध हैं बैकुंठ का बासा हो।
सौ मैं ना कुछ माँगहूं मेरे समरथ दाता हो ॥३॥
सुख सम्पति परिवार धन सुंदर बर नारी हो।
सुपने इच्छा ना उठे गुरु आन तुम्हारी हो ॥४॥
धरम दास की बेनती समरथ सुन लीजे हो।
आवा गवन निवार के अपना कर लीजे हो ॥५॥

॥ गूदड़साँईं का शब्द ॥

सैयाँ हमरे पठइन एक चोली ॥ टेक ॥
सो चोलिया पाँच नव बूटा की, चोलिया पहिर के भइउँ अनमोली १
सो चोलिया हम तन मन पहिरी, चोलिया का बँद सतगुरु खोली २
ब्याह भयो मेरो गवनो नगिचानो, ज्ञान ध्यान की चढ़ चली डोली ३
कहैं गूदड़ धन भइलूँ ससुरैती, नैहर की बात सबै हम भूली ॥४॥

॥ दूलमदास का शब्द ॥

जो कोइ भक्ति किया चाहे भाई ॥ टेक ॥
क़र बैराग भसम कर गोला सो तन मन में चढ़ाई ॥ १ ॥
ओढ़ के बैठ अधिनता चादर तज अभिमान बड़ाई ॥ २ ॥
प्रेम प्रतीत धरै एक तागा सो रहे सुरत लगाई ॥ ३ ॥
गगन मँडल बिच अभिरन झलकत क्यौं न सुरत मन लाई ॥४॥
शेष सहस मुख निस दिन बरनत वेद कोट गुन गाई ॥ ५ ॥
शिव सनकादि आदि ब्रम्हादिक ढूँढ़त थाह न पाई ॥ ६ ॥
नानक नाम कबीर मता है सो मन प्रगट जनाई ॥ ७ ॥
ध्रुव प्रह्लाद यही रस माते शिव रहे ताड़ी लाई ॥ ८ ॥
गुरु की सेवा साध की संगत निस दिन बढ़त सवाई ॥ ९ ॥
दूलमदास नाम भज बन्दे ठाढ़ काल पछिताई ॥१०॥

॥ शब्द ॥

जग में जै दिन है जिन्दगानी ॥ टेक ॥

लाइ लेव चित गुरु के चरनन आलस करहु न प्रानी ॥ १ ॥
यह देहिन का कौन भरोसा उभसा भाठा पानी ॥ २ ॥
उपजत मिटत बार नहिं लागत क्या मग़रूर गुमानी ॥ ३ ॥
यह तो है करता की कुदरत नाम तो ले पहिचानी ॥ ४ ।
आज भलो भजने को औसर काल की काहु न जानी ॥ ५ ।
काहु के हाथ साथ कछु नाहीं दुनिया है हैरानी ॥ ६ ।
दूलमदास विश्वास भजन कर यहि है नाम निशानी ॥ ७ ।

॥ शब्द ॥

चलो चढ़ो मन यार महल अपने ॥ टेक ॥

चौक चाँदनी तारे झलकैं, बरनत बनत न जात गिने ॥ १ ।
हीरा रतन जड़ाव जड़े जहाँ, मोतिन कोटिकितान बने ॥ २ ।
सुखमन पलँगा सहज बिछौना, सुख सोवो को करे मने ॥ ३ ।
दूलमदास के साईं जग जीवन, को आवे यह जग सुपने ॥ ४ ।